

January 2024 I Issue 53 The Prabha Khaitan Foundation Chronicle

To Read is to Learn

Where else can the human mind and heart find knowledge and solace in equal measure than in libraries? Shelves filled with books offer a promise of growth, learning and connection — with others, and with oneself — that all citizens, especially students, can greatly benefit from. In this issue of *Prabha*, let us look at the Foundation's drive to provide compact libraries, known as Book Racks, to colleges across several Indian states, as well as its commitment to all spheres of social and cultural engagement





OTT: A DOUBLE-

A SLICE OF LIFE



TACTILE RELATIONSHIP



FLAVOURS OF ITALY

INSIDE

A FUTURE SHE
DESERVES

MOUNTAIN SYMPHONY

THE MAGIC OF VERSE

THE AUTHOR'S DUTY

NORTHEAST UNVEILED

PAGES COME ALIVE

POWER UP YOUR
PLATE

AN OSLO DIWALI

PUPPET STORIES
UNFOLD

CELLULOID MAGIC

TAGORE'S LEGACY





MANISHA JAIN Honorary COO, Prabha Khaitan Foundation



Libraries are for the Mind and Soul

ery few joys in life compare to the joy of reading. The modernist writer, Virginia Woolf, said, "Books are the mirrors of the soul." For millions of readers, books are the receptacles and reflections of their deepest emotions and experiences. Prabha Khaitan Foundation has always been at the forefront of promoting India's rich literature by hosting conversations with eminent authors and highlighting their books. Another way in which the Foundation has tried to further the cause of literature and learning is by installing small libraries, known as Book Racks, across the country. At first, the Book Racks appeared on the premises of the Foundation's hospitality partners across India, starting with the Taj Bengal in 2015. Since then, the mission has gone from strength to strength. Last year, it reached the grassroots — the Foundation has taken the Book Racks to several schools and colleges in Rajasthan. For who better to give the gift of books to, than students?

We are also proud to announce that the Foundation has been successful in launching its valued initiative, **The Write Circle**, in the Northeastern cities of Dimapur, Shillong and Guwahati. And while the launch in the Mizo capital of Aizawl had to be postponed owing to some last-minute disturbances in the city, we were, happily, able to launch there later, which you can read about in our next issue. In this way, we have brought together a love for literature and our long-standing desire to bring India's treasured northeastern states into our conversations. We hope you will read about our conference with the **Ehsaas** Women of the Northeast in planning upcoming literary events. Moreover, we also held our inaugural session of **The Write Circle** in Thimphu, Bhutan!

We have always focused on celebrating the diversity of art forms, ranging from the culinary to the visual. Thus, when the Michelin starwinning Italian chef, Daniele Sperindio, paid a visit to Kolkata, the Foundation, in association with The Soul Company, hosted a special tasting where the chef wowed diners with his plated magic. Apart from that, a special screening of *Kadak Singh*, a Hindi thriller, as a part of our **Chalchita Rangmanch** initiative, enthralled viewers. Oh, the power of food and cinema!

Our achievements, however, are meaningless if we are unable to give back to society. This past winter, the Foundation distributed blankets and clothes in several parts of India. Girl children in India are extremely vulnerable; therefore, on National Girl Child Day, we have pledged to actively highlight women's issues while continuously fighting against the prejudices that are holding our daughters back. I hope you enjoy reading this edition of *Prabha*, and don't forget to share your thoughts with us at *newsletter@pkfoundation.com!*

Disclaimer: The views and opinions expressed in the articles are those of the authors. They do not reflect the opinions or views of the Foundation or its members.

Probha

SNAPSHOTS OF THE MONTH













The cold is a terrible foe, and hits those with limited means the hardest. To alleviate the suffering of the less fortunate in Kolkata, **Prabha Khaitan Foundation**, under its **Muskaan** initiative, in association with **Education for All Trust** and with the support of Shree Cement Ltd, conducted several blanket distribution drives at different organisations in the city. The folks, young and old, who received the blankets did so with a bright smile, warming the hearts of the donors, who saw to it that no stone was left unturned in spreading warmth and love









बुक रैक पहल: प्रबुद्ध और सशा भविष्य के निर्माण की दिशा में एक कदम

शब्द अगर ब्रह्म हैं, तो किताबें उनकी सारथी। ये छपे शब्द हमारे जीवन को ज्ञान से भरते हैं और हमारे लिए संपूर्ण विश्व का दरवाजा खोलते हैं। लेखक हमारे लिए शब्द-संसार का वह पुल बनाते हैं, जिन पर चढ़ कर हम अपने जीवन में शिक्षा का, ज्ञान का, सफलता का, व्यवहारिकता का और कई अर्थों में मान-सम्मान और समृद्धि का आलोक पाते हैं। शब्दों की इस दुनिया से और किताबों के इस विराट संसार से कोई अछूता न रह जाए, इसके लिए कला, संस्कृति, शिक्षा, वन्यजीव संरक्षण और साहित्च उन्नयन के क्षेत्र में अपने कार्यक्रमों और गतिविधियों से विश्व भर में सांस्कृतिक राजदूत के रूप में स्थापित कोलकाता स्थित प्रभा खेतान फाउंडेशन अपनी अभिनव पहल 'बुक रैक' को एक नया रूप दिया है।

आरंभिक दौर में इस पहल का उद्देश्य ज्ञान और अच्छी किताबों के संसार से समृद्ध लोगों को जोड़ना था, तािक उनमें पुस्तकों के प्रति आकर्षण बढ़े। इस हेतु फाउंडेशन ने आतिथ्य क्षेत्र के साथ साझेदारी में उदयपुर, नागपुर, रायपुर, कोलकाता, जयपुर और भुबनेश्वर जैसे शहरों के प्रतिष्ठित होटलों में १० से अधिक 'बुक रैक' सफलतापूर्वक स्थापित किए हैं। सक्षम और समृद्ध संसार द्वारा 'बुक रैक' पहल को मिली सराहना से उत्साहित फाउंडेशन ने ज्ञान और बौद्धिकता की इस योजना को और वृहद आकार दिया है। दिमाग को आकार देने और सीखने के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने में शैक्षणिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हुए फाउंडेशन ने इसके लिए विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्कूलों को चुना है और वहां 'बुक रैक' स्थापित करके अपनी पहल को जमीनी स्तर तक ले जाने की कोशिश की है।

'बुक रैक' पहल के इस विस्तार का उद्देश्य व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचने के साथ ही हमारे समाज के भावी नेताओं को सही शैक्षणिक संसाधन प्रदान करना है। यह पहल न केवल शैक्षणिक माहौल को समृद्ध करती है बल्कि साहित्य और शिक्षा तक पहुंच को लोकतांत्रिक बनाने के फाउंडेशन के मिशन के साथ भी जुड़ती है। एक साक्षर और सूचित समाज को बढ़ावा देने के लिए प्रभा खेतान फाउंडेशन की प्रतिबद्धता इस विस्तार में स्पष्ट है, क्योंकि यह विभिन्न आयु समूहों और पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को पढ़ने का आनंद प्रदान करता है। जैसे-जैसे किताबों की रैक को शैक्षणिक संस्थानों में एक नया घर मिलता है, फाउंडेशन हमारे राष्ट्र के लिए अधिक प्रबुद्ध और सशा भविष्य के

निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम उठाता है।

हमारी संस्थापक डॉक्टर प्रभा खेतान एक लब्ध प्रतिष्ठित उद्यमी, स्वप्नदर्शी, परोपकारी, समाजसेवी, नारीवादी चिंतक और लेखिका थीं। वह नारी सशािकरण की दिशा में प्रयासरत थीं। उनका लक्ष्य सुनहरे कल का निर्माण करना था। वह 'कर्म ही जीवन है' के मूलमंत्र को मानती थीं, जो आज भी फाउंडेशन का प्रेरणास्रोत है। फाउंडेशन यूनेस्को के इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि दुनिया, विशेषकर तीसरी दुनिया के देशों में गरीब ग्रामीण समुदायों के सतत विकास को बढ़ावा देने में सांस्कृतिक विकास की एक प्रभावी वैकल्पिक भूमिका है। जाहिर है, इसका माध्यम शिक्षा, संस्कार और बेहतर किताबें ही हो सकती हैं।

इसीलिए फाउंडेशन अपनी बहुविध संस्कृति, भाषा, संगीत, साहित्य, दृश्य कला, नृत्य, नाटक, मौखिक परंपराओं और पारंपरिक प्रथाओं का उत्सव मनाता है। फाउंडेशन का मानना है कि संसार को उत्कृष्ट, सक्षम और अधिक मानवीय बनाने के लिए शिक्षा से सबल कोई दूसरा साधन नहीं है। इसीलिए शिक्षा सबके लिए उपलब्ध हो, और 'बुक रैक' पहल हर पाठक तक पहुंचे, उसकी कोशिश यही है। शैक्षणिक संस्थानों की अकादिमक संस्थागत व्यवस्था से 'बुक रैक' को एकीकृत करने की यह पहल कम उम्र से पढ़ने और ज्ञान साझा करने की संस्कृति को निर्मित करने की दिशा में एक रणनीतिक कदम है।

स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में 'बुक रैक' को पहुंचाकर, फाउंडेशन का लक्ष्य हर उम्र और वर्ग के छात्रों के बीच पढ़ने की आदत विकसित करना है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि ज्ञान और विभिन्न प्रकार की उत्कृष्ट पुस्तकों तक उन सबकी भी पहुंच है। 'बुक रैक' पहल सबसे उम्दा और बेहतरीन पुस्तकों को सबके लिए सुलभ कराने की फाउंडेशन की उन कोशिशों का एक हिस्सा है, जो मानता है कि विद्या दान से उत्तम कोई दान नहीं, न ही अच्छी पुस्तकों से श्रेष्ठ कोई साथी।

साथ के पृष्ठों पर दर्ज प्रतिक्रियाएं यह बताती हैं कि फाउंडेशन 'बुक रैक' पहल के माध्यम से शिक्षा और ज्ञान तक सबकी पहुंच को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है।









Rohit Dhar, Apra Kuchhal, Vishwa Mohan Bhatt, Shashi Tharoor, L.P. Pant, H.M. Bangur, Sundeep Bhutoria and Arun Maheshwari at the Book Rack inauguration at the Jaipur Marriott Hotel







Keshari Nath Tripathi, the then governor of West Bengal, inaugurates the Book Rack at the Taj Bengal, Kolkata, with Sundeep Bhutoria





Dona Ganguly at the Taj Vivanta, Kolkata



Alexey Idamkin, Jerome Armstrong, Esha Dutta, Sundeep Bhutoria, Sourav Ghosal, Malika Varma, Sonal Mansingh, Manish Gupta, Raju Barman, Anisur Rahman, Modhurima Sinha and Arindam Sil at the Book Rack inauguration at the Taj Vivanta, Kolkata















प्रभा खेतान फाउंडेशन बुक रैक

शेखावाटी में साहित्यिक क्रांति का आगाज़

अमित शर्मा

चाहता हूं मिट्टी, आग, रोटी, शक्कर, गेहूं, समन्दर, किताबें और जमीन, सभी मनुष्यों के लिए हों।

महान पाब्लो नेरूदा के ये सादे, किन्तु क्रांति भरे विचार शमशेर बाहदुर सिंह के अनुवाद के जिरये हम तक पहुंचे। मिट्टी किसी की जागीर नहीं, समंदर को कोई बांध न सका, आग ने हमें संयम सिखाया, रोटी, शक्कर, गेहूं कृषि खोज के बाद हमें मिले। बचीं किताबें। सच में पाब्लो ने सही कहा, किताबें सभी मनुष्यों के लिए हैं। किताबें सिखाती हैं कि जब हम मनुष्य-से न थे, तो क्या थे? किताबें आगाह करती हैं, अगर हम मनुष्य-से न रहे, तो क्या होगा।

स्मार्ट फोन, स्मार्ट टीवी ने हमें स्मार्ट बना दिया। उंगलियों के पोरे दुखने लगे हैं, फिंगर प्रिंट्स घिसने लगे हैं, फोन की स्क्रीन स्क्रॉल करते–करते, घंटों रील्स में बीत रहे हैं। बराए भारत सरकार की मेहरबानी जिंदगी टिकटॉक से आजाद हुई ही थी कि इंस्टा रील ने इंगेज कर दिया। खैर... तकनीक है, सृजन भी लाती है, विध्वंस भी। 5जी की तरंगों के इस युग में, चलो कुछ और बात करते हैं.. ऐसी बात जो कभी गालिब ने की तो बल्ली मरान से निकली पर दूर तक गई। फैज़ ने की तो लबों की आजादी लेकर आई। नीरज ने की तो कारवां बनाती चली गई। बिस्मिल ने की तो बाजू–ए–कातिल के जोश को फा॥ कर गई। दृष्यंत ने की तो आसमां में सुराख कर गई।

शेखावाटी में इन दिनों काफी चर्चा है। जी नहीं, चुनाव की नहीं, पुस्तकों की! बीते एक साल में शनैः शनैः एक प्रयास अब मुहिम बनकर नजर आने लगा है। अभिव्यक्ति संस्था यहां कथक पर अविस्मरणीय काम कर रही है। उत्तर भारत के एकमात्र शास्त्रीय नृत्य के संवर्धन और संरक्षण के लिए राजस्थान के शेखावाटी अंचल में पिछले दो दशकों से सक्रिय है। इस दौर में नृत्य, संगीत से साहित्य के सनातन संबंध को रेखांकित भी करती है।

किताबों में रुचि है, सो जहां कहीं किताबों की दुनिया के समाचार मिलते हैं, तो शरीर के रोम हरकत (गूजबम्प) में आ ही जाते हैं। एक साहित्य गोष्ठी में शेखावाटी के शिक्षक मिले, उन्होंने 'बुक रैक' के बारे में बताया। नाम सुनकर एकबारगी लगा कि शेखावाटी में शीशम की लकड़ी का बहुत काम होता है, हो सकता है कोई फर्नीचर फैक्ट्री, हम पुस्तक प्रेमियों के लिए कुछ नया लेकर आई हो।

पर नहीं। सुना तो चौंक गया। प्रभा खेतान फाउंडेशन शिक्षा के मंदिरों में मां सरस्वती का आशीष पहुंचा रहा है। 'बुक रैक' के तहत कॉलेजों तक किताबें पहुंच रही हैं। जैसे ही पता चला कि ये काम 'अभिव्यक्ति' के माध्यम से हो रहा है तो उनकी डायरेक्टर – प्रोफेसर अनुपमा सक्सेना को फोन लगाया। तकरीबन आठ से दस मिनट बात हुई होगी, सुन कर मन प्रसन्न हुआ।

जरा सोच कर देखिए, जो साहित्य, दर्शन आज बिसरा दिया गया है, वो हमारे प्रादेशिक अंचलों में फिर प्रस्फुटित हो रहा है। नई पीढ़ी के बीच में। 'बुक रैक' मुहिम के तहत कॉलेजों में एक बुक शेल्फ और तकरीबन डेढ़ सौ किताबें पहुंचाई जा रही हैं। हर किस्म की किताबें इसमें शामिल हैं। कोई जीवनी है, कोई फिक्शन, कहीं अध्यात्म के हरफ हैं तो कहीं, जीवन दर्शन के लफ्ज। सच में डेस्टिनी के लिए सही कहा गया है, जिसे जहां पहुंचना होता है, पहुंच ही जाता है। इन किताबों को इन्हीं नौजवान हाथों तक पहुंचना चाहिए, पहुंच रहीं हैं।

फाउंडेशन की ओर से लगातार देशभर में कला-साहित्य-संस्कृति के संवर्धन के लिए काम होते आ रहे हैं। देश ही क्यों, विदेशों में भी। हाल ही में फाउंडेशन ने लंदन में कलम-ओ-उत्सव का आयोजन किया। क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य को बढ़ावा देने, साहित्य-संस्कृति के प्रतिष्ठित संस्थानों को वित्तीय सहायता देने में फाउंडेशन दो कदम आगे है। शेखावाटी के तीनों जिलों सीकर, झुंझुनूं और चूरू में लगातार फाउंडेशन सक्रिय है। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि हवेलियों, अपनायत के लिए पहचाना जाने वाला ये अंचल अब साहित्यिक गतिविधियों के लिए भी अभिव्यक्ति के मार्फत एक नया कीर्तिमान बनाएगा। मैं इसके लिए आश्वस्त भी हूं और फाउंडेशन को साधुवाद भी देता हूं।

वापस चलते हैं बुक रैक की ओर। शेखावाटी के एक महाविद्यालय की एक छात्रा ने लिखा – कविता देवगन की पुस्तक 'अल्टीमेट ग्रांडमदर्स हैकस' पढ़कर उन्हें खाने के तरीके, एहितयात के बारे में गजब की जानकारी मिली। सीकर के सरकारी कॉलेज के पॉलीटिकल साइंस के एक विद्यार्थी लिखते हैं कि इन किताबों के खजाने से वह गदगद हैं। उनके कॉलेज को यह उपहार देने के लिए शुक्रिया। झुंझुनूं के एक गर्ल्स पीजी कॉलेज की छात्रा का कहना है कि निखिल सचान की 'यूपी–65' पढ़कर वे फिर से हिन्दी की ओर खिंची चली जाती हैं।

पत्रकारीय उत्सुकता के कारण जब इस मुहिम के बारे में जाना, पढ़ने वालों की प्रतिक्रियाएं पता चलीं तो एक और अनूठी बात सामने आई। राजस्थान सरकार की ओर से संचालित राजस्थान कॉलेज एजुकेशन सोसायटी अभी नन्हें कदमों के साथ राजस्थान में है। जब वहां यह 'बुक रैक' पहुंची, तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। संस्था अभी पुस्तकालय की कल्पना ही नहीं कर सकती थी और वहीं उनके पास चलकर किताबें आ गईं। मैं समझ सकता हूं उनकी खुशी। एक मनचाही किताब को देख कर उतनी ही खुशी होती है, जितनी आषाढ़ में पहली बूंद बरसने पर किसान की आंखों से खुशी टपकती है।

इस लेख को लिखे जाने तक शेखावाटी अंचल के 18 राजकीय एवं निजी कॉलेजों तक मां सरस्वती का यह उपहार पहुंच चुका है। 15 संस्थानों में और पुस्तकें पहुंचने का प्रस्ताव विचारों से मूर्त रूप में आने को तैयार है। मन प्रसन्न



है। सवाल भी है। सवाल जरूरी है। किताबें यहीं सिखाती हैं। 'बुक रैक' सिर्फ शेखावाटी में साहित्यिक कदम बढ़ा रहा है या पूरे राजस्थान में ? या पूरे देश में ?

कुछ सवाल जेहन में होने ही चाहिए, ताकि अगली बार फिर कुछ लिखने को उंगलियां कुलबुलाएं। एक शेर याद आ रहा है-

तेरे हर सवाल का जवाब दूगा मेरे घर आना, एक किताब दूगा।

बात किताबों से शुरू हुई थी.. फाउंडेशन के इस विचार से ही साहित्य का दीर्घकालिक प्रसार होता दिख रहा है। तो ऐसे में आपसे विदा लेने से पहले दो बातें और। पहली बात — वुमन स्किल सेंटर्स। फाउंडेशन के प्रकल्प महिला सशीकरण एवं रोजगार के चलते शेखावाटी के सीकर में पहले प्रभा खेतान प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारंभ पिछले साल हो चुका है, जिसे 'अभिव्यक्ति' के संयोजन में संचालित किया जा रहा है। शेखावाटी की धरती पर महिलाओं को सशा बनाने का यह गजब का प्रयास है। फाउंडेशन के वित्तीय सहयोग से सीकर में जरूरतमंद महिलाओं को 'अभिव्यक्ति' की ओर से निःशुल्क प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं। सिलाई, हस्त उत्पाद, पेंटिंग्स आदि कलाओं के जिरये उन्हें स्वावलंबी बनाया जा रहा है। कोई दो राय या शक नहीं कि आने वाले समय में ये महिलाएं इस स्किल के जिरये अपना लघु उद्योग, स्टार्टअप खोलने की ओर अग्रसर होंगी।

'अभिव्यक्ति' के सचिव नेकी राम आर्य और उपाध्यक्ष हरीश माथुर ने बताया कि 15 सालों से 'अभिव्यक्ति' को कत्थक नृत्य के क्षेत्र में फाउंडेशन का सहयोग मिलता ही आ रहा था, अब एक नई इबारत और लिखी जाने लगी है। कोविड के बाद 'प्रभा खेतान शेखावाटी नृत्य शिरोमणि प्रतियोगिता' के रूप में शास्त्रीय एवं लोक नृत्य के क्षेत्र में पहला बड़ा आयोजन। शेखावाटी अंचल में पहली बार तीनों जिला मुख्यालयों पर प्रथम ऑडिशन और दो चरणों की सूक्ष्म प्रक्रिया के पश्चात 7 नवंबर, 2021 को तीन पद्मश्री विभूतियों जज निलनी, कमिलनी एवं गुलाबो जी द्वारा सीनियर एवं जूनियर वर्ग के खिताबों का चयन और क्रमशः 21,000 रुपये एवं 11,000 रुपये की राशि के पुरस्कार सिहत अन्य पुरस्कार दिए गए। 8 दिसम्बर, 2022, इसी प्रतियोगिता के दूसरे सीजन का समापन सुविख्यात इला अरुण, अशोक महाराज (बनारस घराना) और नूतन सक्सेना (लखनऊ घराना) की उपस्थिति में हुआ, जो फाउंडेशन के अमूल्य सहयोग से ही संभव हो पाया।

कथक के लिए प्रशिक्षण और प्रोत्साहन, महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए प्रशिक्षण केन्द्र और अब 'बुक रैक'। शेखावाटी के लोग खुशिकस्मत हैं कि 'अभिव्यक्ति' वहां तल्लीनता से जुटी है। 'अभिव्यक्ति' निर्भीक और आत्मविश्वास से लबरेज है क्योंकि फाउंडेशन का वरदहस्त सदैव उसके साथ है, यह कहते हुए– 'शेखावाटी को संस्कृति और साहित्य कर्म से पोषित करते रहिए, हम हैं न...!'

चलते चलते फिर किताबों पर दो शब्द... बात किताब से शुरू हुई थी तो किताब पर ही खत्म करता हूं।

नहीं जानता कि तू है क्या, तो पढ़ एक किताब जान गया है कि कुछ नहीं है तू, तो लिख एक किताब।

लेखक, पत्रकार और रंगकर्मी होने के साथ अमित शर्मा
 दैनिक भास्कर ऐप के स्टेट वीडियो हेड हैं।



प्रभा खेतान फाउंडेशन बुक रैक

किताब रूपी संपदा से फूट रहे साहित्य के अंकुर

प्रो. अनुपमा सक्सेना

न बाँ पर जायका आता था जो सफ्हे पलटने का, अब उंगली क्लिक करने से बस इक झपकी गुजरती है, बहुत कुछ तह-ब-तह खुलता चला जाता है पर किताबों से जो जाती राब्ता था, कट गया है, कभी सीने पे रख के लेट जाते थे, कभी घुटनों को अपने रेहल की सूरत बना कर नीम सजदे में पढ़ा करते थे, छूटे थे जबीं से...

गुलजार साहब के ये अल्फाज़ तो किताब के केवल बाहरी रूप को ही बयां करते हैं, इससे कई गुना बड़ा संसार तो अपने सम्पूर्ण वैभव और ज्ञान के अलौकिक प्रकाश के साथ इनके अन्दर समाया होता है। एक किताब चाहे कहीं भी हो, अपना काम कर रही होती है। एक किताब अपने शतांश रूप से भी किसी का सम्पूर्ण जीवन परिवर्तित कर देने में सक्षम होती है। एक नन्हें से बालक से लेकर बुजुर्ग तक किताब की यात्रा अनवरत है, और इसमें कहीं कोई संशय नहीं है। 'प्रभा खेतान फाउंडेशन बुक रैक' का राजस्थान की शेखावाटी धरा पर आगमन किसी खूबसूरत उपहार से कम नहीं है। इस उपहार का माध्यम बनी सीकर की एक संस्था 'अभिव्यक्ति', उसका परिचय यहां अपरिहार्य है।

भारत की सनातन संस्कृति में नृत्य की अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध परम्परा रही है और नृत्य मात्र गीत-संगीत और ताल-लय का सामंजस्य ही नहीं है, अपितु अभ्यास, अनुशासन, विनम्रता, समर्पण, लावण्य जैसे गुणों से समाहित



जीवन के प्रति सकारात्मक, कलात्मक एवं उद्देश्यपूर्ण सोच को विकसित करने तथा मानवीय दृष्टिकोण को समग्रता प्रदान करने वाली एक साधना है – इसी विचारधारा के साथ मई 2002 से उत्तर भारत के एकमात्र शास्त्रीय नृत्य 'कथक' के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रयासरत शेखावाटी की पूर्णतः समर्पित संस्था 'अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान' निरंतर प्राण पण से जुटी है।

यह सनातन सत्वा है कि पूर्ण निष्ठा, समर्पण और सच्चे मन से यदि आप अपने पथ पर एकाग्र होकर चलते रहते हैं तो अनेक कठिनाइयों के बावजूद आपकी यात्रा जारी रह सकती है। अभी अभिव्यक्ति अपने लड़खड़ाते और डगमगाते कदमों से रास्ता पहचानने की कोशिश कर ही रही थी कि एक संरक्षक और पथ प्रदर्शक के रूप में अप्रैल, 2008 में प्रभा खेतान फाउंडेशन के सम्माननीय संदीप भूतोड़िया ने आकर न केवल अभिव्यक्ति की उंगली थामी बल्कि तब से निरंतर सानिध्य प्रदान करते आ रहे हैं।

बहुत विनम्रता से कहना चाहती हूं कि विगत 15 वर्षों में 'अभिव्यक्ति' ने सम्पूर्ण शेखावाटी अंचल में कथक एवं राजस्थानी लोकनृत्य के क्षेत्र में जितने भी मुकाम हासिल किये हैं, स्थानीय स्तर पर प्रसिद्ध कलाकारों की नृत्य कार्यशालाएं हों या सम्पूर्ण शेखावटी स्तर पर 'प्रभा खेतान शेखावटी नृत्या शिरोमणि' द्वारा नृत्य प्रतिभाओं की खोज हो, वे सब फाउंडेशन के सहयोग का ही सुफल हैं। अभिव्यक्ति के माध्यम से सम्पूर्ण शेखावाटी और विशेष रूप से इस नृत्य का नियमित प्रशिक्षण लेने वाली बालिकाएं हृदय की गहराइयों से कृतज्ञता ज्ञापित करती हैं। यहां तक के इस सफ़र में फाउंडेशन के आदरणीय मोहन कुमार को धन्यवाद दिए बिना आगे नहीं बढ़ सकती। उनके अविस्मरणीय योगदान के समक्ष भी 'अभिव्यक्ति' नतमस्तक है।

नृत्य के प्रति समर्पित संस्था का किताबों से क्या सम्बन्ध? बहुत गहरा सम्बन्ध है! भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की समृद्ध परंपरा सदैव से ही साहित्य से जुड़ी रही है। 'अभिव्यक्ति' के माध्यम से इसे भरसक जीने का प्रयास होता है। कदाचित फाउंडेशन ने इसे पहचाना और जुलाई, 2022 में एक अत्यंत पावन, समसामयिक, महत्वपूर्ण और गुरुत्तार दायित्व अभिव्यक्ति को सौंपा – 'प्रभा खेतान फाउंडेशन बुक रैक' प्रोजेक्ट। मूल रूप से मैं एक साहित्य की विद्यार्थी हूं, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, मैत्रैयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, मन्नू भंडारी जैसे हस्ताक्षर मेरे मानस एवं हृदय पटल पर अंकित हैं, विगत 28 वर्षों से कॉलेज में अध्यापन कर रही हूं तो फिर मेरे लिए तो ये प्रोजेक्ट बिलकुल मेरा अपना ही था। किताबों से गहरा नाता मुझे और भी उत्साहित कर रहा था। जिस दिन यह प्रोजेक्ट मुझे मिला, उसी दिन ऐसा प्रतीत हुआ जैसे एक नई राह रौशन हो गई हो। कालांतर में अनुभूति हुई कि एक-एक रैक मानो एक प्रकाश पुंज है और हर कॉलेज एक घर की दहलीज। जैसे ही इसकी संभावनाएं तलाशने की औपचारिकता शुरू हुई तो ज्ञात हुआ कि किताबों से कुछ दूरी हुई तो है, मगर किताब का अस्तित्व और व्यक्तित्व बहुत विराट है। हमारा दायित्व था कि हम सीकर, चुरू और झुंझुनू के ऐसे कॉलेज चुनें जहां किताबों की आवश्यकता हो।

बहुत हर्षानुभूति हुई कि एक लम्बी सूची हमें प्राप्त हो गई, किन्दुा कुछ बातों के लिए हमें भी आश्वस्त होना था क्योंकि उस उद्देश्य को पूर्ण करने की जिम्मेदारी बहुत बड़ी थी, जिस उद्देश्य से ये 'पुस्तक सम्पदा' फाउंडेशन शेखावाटी में भेज रहा था। हम यह सुनिश्चित कर लेना चाहते थे कि इनका उपयोग सही अर्थों में हो, भरपूर हो, जरूरतमंद विद्यार्थियों द्वारा हो और इनकी कद्र हो, कीमत समझी जाए। पहले चरण में 5 और फिर दूसरे चरण में 13 कॉलेज इस प्रोजेक्ट के लिए चुने गए। लगभग 20 कॉलेजों की सूची हमारे पास सुरक्षित है। हमारी सूची में सरकारी और निजी, स्नातक और स्नातकोत्तर, दोनों तरह के कॉलेज हैं। इस प्रोजेक्ट के माध्यम से 'अभिव्यक्ति' और

व्यक्तिगत रूप से 'मैं' बहुत समृद्ध हो रहे हैं। इतने खूबसूरत अनुभव और इतना सुकून जैसे सोने पे सुहागा। जब फाउंडेशन की बुक रैक की पुस्तक – सम्पदा किसी प्रतिष्ठित, पुराने और समृद्ध कॉलेज की लाइब्रेरी में पहुंचती है तो लगता है मानो किताबों के गुलशन में एक नया गुल खिल गया हो। फिर वहां के शिक्षक, विद्यार्थी, मैनेजमेंट मेम्बर्स सब की आंखों में कृतज्ञता और उत्साह जैसे हमें सातवें आसमान पर पहुंचा देता है। जब उन्हें हर किताब पर लेखक के 'ऑटोग्राफ' दिखाए जाते हैं तो फिर उनके चेहरे की चमक अंतर्मन को भी छू जाती है।

दूसरी श्रेणी के वह कॉलेज हैं जहां अभी सरकारी संसाधन पहुंच ही नहीं पाए हैं। दरअसल छोटे-छोटे गांवों और कस्बों में राजस्थान सरकार ने पिछले 3-4 वर्षों में लगभग 300 कॉलेज शुरू किये हैं और इन कॉलेज में या तो नाममात्र की पुस्तकं हैं या फिर एक भी पुस्तक अभी नहीं पहुंची है। स्वाभाविक है, कार्य अपनी गित से हो रहे हैं। बहुत गर्व के साथ साझा करना चाहूंगी कि फाउंडेशन की 'बुक रैक' के माध्यम से 6 कॉलेज में लाइब्रेरी का शुभारंभ हो गया है। ऐसे गांव और कस्बे जो बहुत दूर-दराज हैं, वहां सरकार के इस सराहनीय कार्य में इस प्रोजेक्ट के माध्यम से अविस्मरणीय योगदान दिया जा रहा है। जो विद्यार्थी इन किताबों तक पहुंचने में असमर्थ हैं, उन तक ये स्वयं पहुंच रही हैं। बहुत भावुक होते हैं वो पल, जब ऐसे कॉलेज में इस अनमोल सम्पदा को लेकर पहुंचते हैं। किसी मासूम बच्चे-सा प्रतीत होता है वो कॉलेज जिसे कुछ समझ ही नहीं है। जब सीमित संसाधनों में अप्रतिम कार्य कर रहे वहां के शिक्षक कृतज्ञता दिखाते हैं तो मन भर आता है।

बहुत अनुभव हो रहे हैं, मगर एक के उल्लेख का लोभ संवरण मैं नहीं कर पा रही हूं। सुजानगढ़ के एक नवस्थापित बालिका महाविद्यालय में जब हम पहुंचे तो वहां की बालिकाएं इन पुस्तकों से इतनी अभिभूत थीं कि प्रभा खेतान जी का परिचय देते समय, जिस तन्मयता से वो बालिकाएं उनके बारे में सुन रही थीं, उसे देखकर मैं एक अलौकिक अनुभूति से गुजरने लगी। फिर जैसे सवाल उन्होंने किये तो लगा जैसे कितनी सारी प्रभा खेतान इनमें समायी हुई हैं। वो इससे अनिभन्न थीं कि प्रभा जी उन्हों की मातृभूमि से आती हैं। जब जाना तो स्वाभाविक रूप गर्वित दिखीं।

मैं निःशब्द हूं, नतमस्तक हूं और अभिभूत हूं कि इस विराट, महान प्रकल्प का एक छोटा-सा हिस्सा बन पाई हूं। अभी तो आरम्भ ही हुआ है। 'अभिव्यक्ति' का सौभाग्य है कि फाउंडेशन ने न केवल अपना विश्वास जताया है बल्कि हौसला भी दिया है। जब आपका हाथ कोई बड़ा पकड़ कर चलता है तो आप बेफिक्र भी हो जाते हैं, उत्साहित भी।

जुलाई, 2022 में ही एक और दायित 'अभिव्यक्ति' को सौंपा गया था, पुनः एक भला और महत्वपूर्ण कार्य 'महिला सशीकरण और स्वरोजगार' से संबंधित। यह है – 'प्रभा खेतान महिला प्रशिक्षण केंद्र', जहां पिछले 14 महीनों से 60 महिलाएं निःशुल्क सिलाई, कढ़ाई, बुनाई इत्यादि का प्रशिक्षण ले रही हैं। गत 2 वर्षों से फाउंडेशन की ट्रस्टी मानसी कामदार शाह के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु मेरे पास शब्दों का अभाव है, उनके प्रति हृदय से आभारी हूं।

भविष्य की कोख में अभी और भी प्रकल्प हैं जहां एक अग्रज के रूप में फाउंडेशन, अभिव्यक्ति को अपने मार्गदर्शन और सहयोग से शेखावटी में कुछ नवीन, उपयोगी और सार्थक कार्य करने का अवसर प्रदान करेगा। टीम 'अभिव्यक्ति' कृत संकल्पित है कि कदम कभी पीछे नहीं हटाएगी। परम पिता से प्रार्थना है कि फाउंडेशन की अपेक्षाओं पर खरा उतरते हुए 'अभिव्यक्ति' अपने स्थानीय प्रकल्पों पर भी सक्रिय रहे।

-प्रो.अनुपमा सक्सेना सीकर राजकीय महाविद्यालय की प्राचार्य एवं अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान की निदेशक हैं।

बुक रैक में हर पुस्तक अपने आप में एक नगीना

बी.एस. मेमोरियल कॉलेज, रानोली

"यहां बुक रैक में रखी हर पुस्तक अपने आप में एक नगीना है।" बी.एस. मेमोरियल कॉलेज, रानोली में प्रभा खेतान फाउंडेशन के 'बुक रैक' अनावरण समारोह में कहे गए ये शब्द खुशी बयां करने के लिए पर्याप्त हैं। जब भी शिक्षकगण अनुमित दें, इन पुस्तकों का अध्ययन करें। इनमें आत्मकथाएं हैं, जीवनियां हैं, उपन्यास हैं... हो सकता है इनमें से किसी एक किताब के एक पन्ने से आपके जीवन को ऐसा मोड़ मिल जाए, जो आपका जीवन ही बदल दे।



ये पुस्तकें पाठकों के अमूल्य ज्ञानवर्धन का माध्यम

राजकीय कला महाविद्यालय, खंडेला, सीकर

राजकीय कला महाविद्यालय, खंडेला में **प्रभा खेतान फाउंडेशन**, कोलकाता के प्रोजेक्ट 'बुक रैक' के तहत किताबें दान की गईं। बुक रैक के अनावरण अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य तथा शिक्षणगणों के अतिरि अभिव्यक्ति संस्था की ओर से अध्यक्ष डॉ. अनुपमा सक्सेना, सचिव डॉ. नेकी राम आर्य सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे।





"

प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा 'नि:शुल्क पुस्तक वितरण' मुहिम के तहत राजकीय महाविद्यालय, खंडेला में महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रदान की हैं। इनमें अध्ययन के सभी प्रमुख क्षेत्र जैसे कला संस्कृति, वर्तमान सामाजिक – राजनीतिक परिदृश्य के पहलू समाहित हैं। नवीन महाविद्यालय होने से पुस्तक अभाव की स्थिति में ये पुस्तकें पाठकों हेतु अमूल्य ज्ञानवर्धन का माध्यम बनेंगी। महाविद्यालय इस उपहार के लिए प्रभा खेतान फाउंडेशन का बहुत आभारी है।

- डॉ. पाणिनि नीमड़, सहायक आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, खंडेला, सीकर

प्रभा खेतान फाउंडेशन ने पुस्तकें हमारे कॉलेज को भेंट की हैं, उनमें सोनल मानसिंह जैसी हस्तियों की आत्मकथाएं हैं तो साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार जीत चुकी टेल्स ऑफ हजारीबाग तथा सुप्रतो बागची की एलिफेंट कैचर्स जैसी उपयोगी पुस्तकें भी शामिल हैं। ये पाठकों को न केवल पसंद आएंगी, उनका ज्ञान वर्धन एवं मार्गदर्शन भी करेंगी। प्रभा खेतान फाउंडेशन को हार्दिक आभार।

- नीतू शर्मा, सहायक आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, खंडेला, सीकर

राजकीय महाविद्यालय, खंडेला के पुस्तकालय में प्रभा खेतान फाउंडेशन कोलकाता द्वारा लेखकों की स्व-हस्ताक्षरित प्रतियां उपलब्ध कराई गई हैं जो कि महाविद्यालय हेतु मान-सम्मान का विषय है। यहां पर उपलब्ध पुस्तकों में भूगोल, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, हिंदी साहित्य और अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकों के साथ ही विभिन्न महापुरुषों की जीवनियां तथा भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर लिखे गए ग्रंथ तथा अनुदित ग्रंथ भी शामिल हैं। जैसे कि अश्विन सांघी की पुस्तक 'सियालकोट गाथा', नीलिमा डालिमया की पुस्तक 'कस्तूरबा की रहस्यमयी डायरी' तथा शिश थरूर की पुस्तक 'अंधकार काल: भारत में ब्रिटिश साम्राज्य', पवन के. वर्मा की पुस्तक 'आदि शंकराचार्य' आदि। ये सभी पुस्तकें विद्यार्थियों को अपने विषय के साथ-साथ भारतीय राजनीति व्यवस्था और महापुरुषों के संघर्षों को गहराई से समझने में मदद करती हैं।

- डॉक्टर सुधीर सैनी, सहायक आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, खंडेला





... हाथों में किताब तो अच्छा हो

जीएचएस गवर्नमेंट कॉलेज, सुजानगढ़

जीएचएस गवर्नमेंट कॉलेज, सुजानगढ़ को करीब 150 पुस्तकें मिली हैं। इस अवसर पर प्राचार्या प्रो. विनीता चौधरी ने 'बुक रैक' प्रोजेक्ट के लिए प्रभा खेतान फाउंडेशन का आभार कासिर के इस शेर से जताया – बारूद के बदले हाथों में किताब तो अच्छा हो, ऐ काश! हमारी आंखों में इक्कीसवां ख्वाब तो अच्छा हो। सहायक आचार्य विजय सिंह ने कहा कि समाज एक सोयी अंधेरी रात की तरह है जिस किताबें जागृति की रोशनी बनकर विकास पथ पर अग्रसर करती हैं।









समाज एक सोयी रात की तरह है, किताब जागृति की रोशनी बनकर जिसे विकास पथ पर अग्रसर करती है। प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा भेट की गई कुछ किताबों का मैंने अध्ययन किया, मेरे दृष्टिकोण से इस उल्लेखनीय फाउंडेशन की किताबें समाज हित में प्रकाश स्तम्भ का दायिट्वा बखूबी निभाएंगी। इनकी कहानियां व्यावहारिक जीवन से जुड़ी हुई हैं। मेरे लिए इस फाउंडेशन की किताबें अमूल्य और ज्ञानवर्धक हैं। मैं इस भेंट के लिये आपका हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

- विजय सिंह, सहायक आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, सुजानगढ़

प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा उपलब्ध कराई गई किताबें सिद्ध करती हैं कि किताबें मनुष्य का ज्योतिपुँज हैं। इनमें इतिहास और व्यावहारिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को बहुत गहराई से स्पर्श किया गया है। फाउंडेशन का हार्दिक आभार।

> - प्रो. विनीता चौधरी, प्राचार्या, जीएचएस राजकीय महाविद्यालय, सुजानगढ़, चूरू

विज्ञान संकाय में अध्ययनरत होते हुए भी मैंने प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा उपलब्ध कराई गई पुस्तकों का अध्ययन किया। मुझे ये पुस्तकें बहुत अच्छी एवं ज्ञानवर्धक लगीं।

– आशुतोष, बीएससी (तृतीय), जी.एच.एस. राजकीय महाविद्यालय, सुजानगढ़, चूरू



पुस्तकें एकांत की सबसे अच्छी एवं सच्ची साथी

राजकीय कन्या महाविद्यालय, फतेहपुर सीकर

राजकीय कन्या महाविद्यालय, फतेहपुर सीकर की प्राचार्य बबल शर्मा ने पुस्तकों को एकांत की सबसे अच्छी एवं सची साथी बताते हुए 'बुक रैक' प्रोजेक्ट के तहत पुस्तकें दान करने के लिए प्रभा खेतान फाउंडेशन का हार्दिक आभार जताया एवं साधुवाद दिया।





पुस्तकें जीवन्त देव प्रतिमाएं हैं, इनकी आराधना से तत्काल प्रकाश एवं उल्लास मिलता है – पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

कहा जाता है कि इनसान के एकांत की सबसे अच्छी एवं सची साथी पुस्तकें होती हैं। किताबों की दुनिया आपके लिए एक भव्य लोक का मार्ग प्रदर्शन करती हैं और इस राह में दीपक के समान आगे दिखाने और शिखर तक ले जाने की शुरुआत प्रभा खेतान फाउंडेशन के द्वारा की गई है। शेखावाटी अंचल में दूर-दराज़ से आने वाली छात्राओं के लिए ये पुस्तकें अत्यांत उपयोगी एवं मार्गदर्शक सिद्ध होंगी। पुस्तकालय किसी भी महाविद्यालय का हृदय होता है और इस महाविद्यालय को स्पन्दन प्रभा खेतान फाउंडेशन से मिला है। अनंत स्थल की गहराईयों से आपका हार्दिक आभार एवं साधुवाद।

बबल शर्मा, प्राचार्य, राजकीय कन्या महाविद्यालय, फतेहपुर सीकर

ये पुस्तकें विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी

राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर में **प्रभा खेतान फाउंडेशन**, कोलकाता ने प्रोजेक्ट बुक रैक के तहत पुस्तकें दान कीं। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. पुष्पा चौधरी, अभिव्यक्ति के सचिव डॉ. नेकी राम आर्य, अभिव्यक्ति की अध्यक्ष डॉ. अनुपमा सक्सेना आदि मौजूद रहे। डॉ. पृष्पा ने कहा कि ये पुस्तकें विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी होंगी।





प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त पुस्तकें साहित्य, धर्म, संस्कृति, इतिहास, और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के गहन ज्ञान को उजागर कर पाठक के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती हैं। ये प्राचीन व नवीन जीवन मूल्यों व अनुसंधान के विभिन्न विषयों को पाठक के समक्ष रखती हैं। डॉ प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' नारी जीवन का संपूर्ण दर्पण है, तो 'आओ पेपे घर चलें' प्रवासी भारतीयों के जीवन का जीवंत चित्र है।

विविध विषयों से जुड़ा विस्तृत साहित्व, अध्ययनकर्ता को नवीन दृष्टि व विचारों को नवीन दिशा देकर नए अनुसन्धान को प्रेरित करता है। इस दृष्टि से शेखावाटी विश्वविद्यालय के निकट स्थित राजकीय कला महाविद्यालय के पुस्तकालय में प्रभा खेतान फाउंडेशन के द्वारा प्रदत्त साहित्व का अनुसन्धान कार्य करने वाले विद्यार्थियों हेतु विशेष महुत है। लेखकों द्वारा स्व-हस्ताक्षरित साहित्व पाठकों व पुस्तकालय हेतु अनमोल निधि सामान है।

- डॉ. सुनीता सैनी, सह-आचार्य, हिंदी, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

प्रभा खेतान फाउंडेशन के सहयोग से अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान, सीकर की विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों को पुस्तकें दान करने की पहल एक स्वागत योग्य कदम है। हमारे कॉलेज में प्राप्त पुस्तकों का संग्रह बहुत समृद्ध है और आत्मकथाओं से लेकर काल्पनिक और कथेतर, विभिन्न विधाओं की पुस्तकें उपलब्ध हैं। इससे निश्चित रूप से छात्रों के साथ-साथ संकाय सदस्यों में भी साहित्यिक लोकाचार का विकास होगा।

- अनीषा गोयल, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज सीकर के सभी छात्रों की ओर से, मैं हमारी लाइब्रेरी में पुस्तकों के आपके बहुमूल्य योगदान के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। इस योगदान ने हमारे पुस्तकालय को समृद्ध और सशक्त बनाया है और इससे वर्षों तक अनगिनत छात्रों को लाभ होगा। शिक्षा के प्रति आपकी प्रतिबद्धता है।

प्रिय प्रभा खेतान फाउंडेशन, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर के सभी विद्यार्थियों की ओर से हार्दिक आभार व्या करता हूं कि आपने पुस्तकें भेंट कर हमारे पुस्तकालय को और समृद्ध कर दिया है।

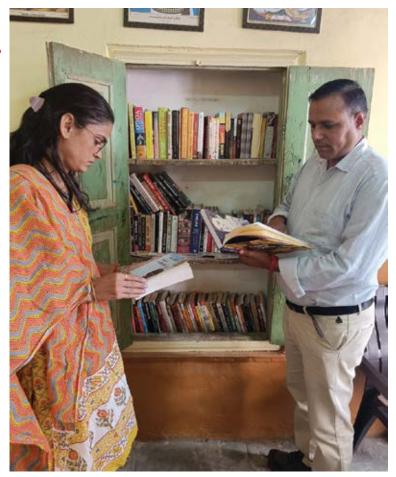
- योगेश चौधरी, एमए अंतिम वर्ष, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

किताबें परिवर्तन का इंजन, विश्व की खिड़कियां

राजकीय महाविद्यालय, फतेहपुर, सीकर

राजकीय महाविद्यालय, फतेहपुर, सीकर को प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता के प्रोजेक्ट 'बुक रैक' के तहत 112 पुस्तकें दान की गईं। इसके लिए महाविद्यालय के प्राचार्य एवं अन्य प्राध्यापकों ने साधुवाद एवं धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि किताबें परिवर्तन का इंजन हैं, विश्व की खिड़कियां हैं।









भविष्य में भी ऐसे ही सहयोग की उम्मीद

ग्रामीण महिला महाविद्यालय, सीकर

ग्रामीण महिला महाविद्यालय, सीकर में प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता के प्रोजेक्ट 'बुक रैक' के तहत पुस्तकें दान की गईं। प्रिंसिपल डॉ. सुधा ने बुक रैक के बारे में कहा कि यह अत्यंत सराहनीय पहल है तथा इन्होंने पुस्तकें दान कर सराहनीय योगदान दिया है, भविष्य में भी ऐसे ही सहयोग की उम्मीद रखते हैं।





प्रभा खेतान फाउंडेशन के द्वारा भेंट की गई पुस्तकें बहुमूल्य निधि हैं। इन पुस्तकों के माध्यम से समाज को एक नई दिशा मिलेगी। गीतांजलि श्री की 'रेत की समाधि' मध्यम वर्गीय परिवार एवं रिश्तों की बारीकियों को उकेरता है, वहीं 'अकबर', 'रानी पिदानी' जैसी ऐतिहासिक पुस्तकें तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश का बोध कराती हैं।

> - डॉ. संगीता गर्वा, सहायक आचार्य, ग्रामीण महिला महाविद्यालय, सीकर

प्रभा खेतान फाउंडेशन ने अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान सीकर के माध्यम से ग्रामीण महिला महाविद्यालय को जो पुस्तकों का बहुमूल्य उपहार भेंट किया है, उसके लिए मैं प्रभा खेतान फाउंडेशन एवं अभिव्याि संस्थान की अध्यक्ष डाॅ. अनुपमा सक्सेना व डाॅ. नेकी राम जी को धन्यवाद देता हूं। इन पुस्तकों के माध्यम से छात्राएं एक दिशा में नहीं, बल्कि चहुंमुखी दिशा में अपना ज्ञान विस्तृत कर पाएंगी। ये पुस्तकें नारी चेतना, सामाजिक चेतना, आधुनिक बोध एवं वर्तमान नवीन परिवेश की व्याख्या प्रस्तुत करती हैं।

-डॉ. आर. के. सिंह, सचिव, ग्रामीण महिला महाविद्यालय, शिवसिंहपुरा, सीकर





उपयोगी पुस्तकों के लिए आभार स्वीकारें

श्रीमती हरकोरी देवी पीजी महाविद्यालय, झुंझुनू

श्रीमती हरकोरी देवी पीजी महाविद्यालय, झुंझुनू में अभिव्यक्ति संस्था की अध्यक्ष डॉ. अनुपमा सक्सेना के माध्यम से **प्रभा खेतान फाउंडेशन**, कोलकाता ने विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकगणों के लिए उपयोगी पुस्तकें भेंट कीं। इसके लिए प्राचार्य डॉ. हर्ष कुमार सिहत समस्त प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने आभार जताया।



हमारे महाविद्यालय के पुस्तकालय को पुस्तकें दान करने के लिए **प्रभा खेतान फाउंडेशन**, कोलकाता को धन्यवाद। मुझे यकीन है कि आपकी दान की गई पुस्तकों से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन होगा। हमारे महाविद्यालय के विद्यार्थियों को भविष्य में इन पुस्तकों का लाभ मिलता रहेगा। आशा करता हूं कि भविष्य में भी आप हमें सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

- डॉ. हर्ष कुमार, प्राचार्य, श्रीमती हरकोरी देवी (पी. जी.) महाविद्यालय, झुंझुनू

प्रभा खेतान फांउडेशन ने जो भी पुस्तकें दान की हैं, उनका हमें और हमारे बच्चों को भरपूर फायदा मिल रहा है और भविष्य में भी हमें इन पुस्तकों का फायदा मिलता रहेगा। हमारे महाविद्यालय के बच्चे पुस्तकालय में इन पुस्तकों का अध्ययन करते रहते हैं।

- कुलदीप, सहायक आचार्य, श्रीमती हरकोरी देवी (पी. जी.) महिला महाविद्यालय, झुन्झुनूं

प्रभा खेतान फांउडेशन को पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद। इन पुस्तकों से हमें अध्ययन में सहयोग मिल रहा है और भविष्य में भी मिलता रहेगा।
- मोनिका कुमारी, बीए प्रथम वर्ष, श्रीमती हरकोरी देवी (पी. जी.) महिला महाविद्यालय, झुंझुनू





ये ऐतिहासिक पुस्तकें, समाज को जोड़ती हैं

इस्लामिया पी.जी. कॉलेज, सीकर

प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता की ओर से अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से इस्लामिया पी.जी. कॉलेज, सीकर में 150 से अधिक साहित्यिक पुस्तकें भेंट की गईं। कॉलेज प्राचार्य डॉ. मोहम्मद आरिफ, सचिव अब्दुल रज्जाक पंवार सहित पूरे महाविद्यालय ने इसके लिए आभार जताया।



प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा भेंट की गई पुस्तकों में से मैंने ऋषिकेश सुलभ की कृति 'अग्निलीक' पढ़ी। यह उपन्यास वह कथा है, जिसके रा में आजादी के पूर्वार्द्ध यानी 1857 के विद्रोह की गरमाहट है, साथ ही अंग्रेजों के विरुद्ध एक साथ लड़ने की हिन्दू—मुस्लिम एकता भी नजर आती है।

– डॉ. मोहम्मद आरिफ, प्राचार्य, इस्लामिया पी.जी. कॉलेज, सीकर

मैंने प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा कॉलेज को प्रदान की गई साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार से पुरस्कृत नीलोत्पल मृणाल की कृति 'डार्क हार्स' पढ़ी। यह पुस्तक उन छात्रों के लिए सबसे अच्छी किताबों में से एक है, जो सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। यह पुस्तक 21वीं सदी की हिंदी की सर्वाधिक चर्चित किताब है। इस उपन्यास के किरदार आपको किसी भी कॉलेज या किसी भी कोर्स की तैयारी करते हुए मिल जाएंगे।

इसी के साथ इस्लामिया परिवार धन्यवाद करता है प्रभा खेतान फाउंडेशन का, जिसने ऐसे अमूल्य उपन्यास संस्था को भेंट किये।

रफीक खान, सहायक आचार्य वाणिज्य विभाग, इस्लामिया पी.जी.
 कॉलेज, सीकर

हमारे कॉलेज को जो किताबें प्रभा खेतान फाउंडेशन से प्राप्त हुई हैं, उन पुस्तकों में से कुछ को मैंने पढ़ा, मुझे वे पुस्तकें बेहद ज्ञानवर्धक व रोचक लगीं। मुझे आशा है कि मेरी तरह ही अन्य छात्र-छात्राओं के लिये भी यह पुस्तकें बेहद रोचक, उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक साबित होंगी।

- चंचल सोनी, बी.ए. तृतीय वर्ष छात्रा, इस्लामिया पी.जी. कॉलेज, सीकर







पुस्तकों की संपदा उपहार में पाकर खुश हो गईं छात्राएं

जे.बी. शाह गर्ल्स पी. जी. कॉलेज, झुंझुनू

प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा दी गई 'बुक रैक' रूपी भेंट पाकर जे.बी. शाह गर्ल्स पी. जी. कॉलेज, झुंझुनू के शिक्षकगण एवं छात्राएं गदगद् हो गए। उन्हें पुस्तकों की संपदा रूपी यह उपहार प्रदान किया गया। प्राचार्या डॉ. योगिता शर्मा ने कहा कि ऐसी अनमोल, अमूल्य, व्यावहारिक जीवन से जूड़ी पुस्तकों की सप्रेम भेंट पाकर हम कृतज्ञ हैं।





'अंधेरी शब में हमेशा से इल्म वाले लोग किताब पढ़ते हुए रोशनी बनाते हैं।' – इसहाक

किताबें सभ्यता की वाहक हैं। किताबों के बिना इतिहास मौन है, साहित्य गूंगा है, विज्ञान अपंग है, विचार और अटकलें स्थिर हैं। ये परिवर्तन का इंजन हैं, विश्व की खिड़िकया हैं तथा समय के समुद्र में खड़ा प्रकाश स्तम्भ हैं। इसी प्रकाश स्तम्भ से समाज के अंधेरों को मिटाने वाली ज्योतिमय पुस्तकें प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त की गईं, जो समाज, संस्कृति, व्यावहारिक जीवन और अनकहे जज्बातों को छूने वाली हैं। अच्छी किताबों को पढ़ना पिछली सिदयों के लोगों को समझने जैसा हैं। ऐसी अनमोल, अमूल्य व्यावहारिक जीवन से जुड़ी हुई पुस्तकों की सप्रेम भेंट के लिए महाविद्यालय परिवार प्रभा खेतान फाउंडेशन कर हृदय से आभार व्यक्त करता है।

- डॉ. योगिता शर्मा, प्राचार्या, जे.बी.शाह गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, झुंझुनू

में 'प्रभा खेतान फाउंडेशन' का हार्दिक धन्यवाद करती हूं। आपके द्वारा भेंट की गई पुस्तकों में से मैने कुछ पुस्तकों को पढ़ा। 'यूपी 65' के लेखक 'निखिल सचान' ने हजारों लोगों को उंगली पकड़कर हिन्दी की किताबों से जोड़ा। ये उन लोगों के बीच गहरी पैठ रखते हैं जो क्लासिक हिन्दी साहित्य के शौकीन हैं। ये पुस्तकें मेरे लिए अमूल्य उपहार स्वरूप हैं और ज्ञानवर्धक भी हैं।

- रेखा जेवरिया, हिन्दी व्याख्याता, जे.बी. शाह गर्ल्स (पी.जी.) महाविद्यालय झुंझुनू

मैंने **'प्रभा खेतान फाउंडेशन'** की पुस्तकों का अध्ययन किया। मुझे आपकी फाउंडेशन' की पुस्तकें अच्छी लगीं। ये पुस्तकें हमारे जीवन में ज्ञानवर्धक भी हैं जो कि मेरे लिये अमूल्य उपहार स्वरूप हैं।

- रतन प्रिया, छात्रा बी.ए पार्ट 1, जे.बी. शाह गर्ल्स (पी.जी.) महाविद्यालय झुंझन्



अनेक दुर्लभ पुस्तकें, जो बाजार में भी उपलब्ध नहीं

महारानी बालिका महाविद्यालय, झुंझुनू

महारानी बालिका महाविद्यालय, झुंझुनू में **प्रभा खेतान फाउंडेशन**, कोलकाता ने अभिव्यक्ति संस्था के माध्यम से पुस्तकें भेंट कीं। महाविद्यालय के बी.एड. विभाग की नीरजा कुलश्रेष्ठ ने 'बुक रैक' के लिए फाउंडेशन, कोलकाता और अभिव्यक्ति का आभार जताते हुए कहा कि इनमें से अनेक पूस्तकें इतनी दुर्लभ हैं कि बाजार में भी आसानी से उपलब्ध नहीं हैं।



पुस्तकें पढ़कर मनुष्य अपने कर्तव्यों को निभाते हुए अपनी मंजिल तक पहुंचना सीख जाता है। पुस्तकें अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाती हैं। **प्रभा खेतान फाउंडेशन**, कोलकाता द्वारा भेंट की गई पुस्तकें हमारे व्यावहारिक जीवन, संस्कृति, समाज एवं भावनाओं को स्पर्श कर देने वाली हैं, ये पुस्तकें ज्ञानवर्धक भी हैं जो मेरे लिए अमूल्य हैं। आपकी पुस्तकें आसानी से बाजार में उपलब्ध नहीं होतीं।

- नीरजा कुलश्रेष्ठ, बी.एड. विभाग, महारानी बालिका महाविद्यालय, अलसीसर (झुंझुनू)

मैं ज्योति कुमारी महारानी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज की छात्रा हूं। हमारी संस्था में प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता ने जो पुस्तकें भेंट कीं, उनमें से कुछ का मैंने अध्ययन किया। ये पुस्तकें सब विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक साबित हुई हैं। इन पुस्तकों रूपी अमूल्य उपहार के लिए फाउंडेशन का हार्दिक आभार।

– ज्योति कुमारी, बी. एससी. बी. एड. चुतुर्थ वर्ष, महारानी बालिका महाविद्यालय, अलसीसर (झुंझुनू)

मैं प्रियंका महारानी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज की छात्रा हूं। मैंने संस्था में प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा भेंट की गई पुस्तकों को पढ़ा। ये पुस्तकें ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ प्रेरणादायक भी हैं। ऐसे अमूल्य उपहार के लिए प्रभा खेतान फाउंडेशन को धन्यवाद।

> – प्रियंका, बी.ए. बी.एड. चतुर्थ वर्ष, महारानी बालिका महाविद्यालय





आपकी पुस्तकें हमारे लिए अमूल्य उपहार

मास्टर भंवरलाल मेघवाल गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज, सुजानगढ़, चूरू

सुजानगढ़ के मास्टर भंवरलाल मेघवाल गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज, सुजानगढ़, चूरू में **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से बुक रैक प्रोजेक्ट के तहत 121 पुस्तकें दान की गईं। फाउंडेशन की ओर से प्रो. अनुपमा सक्सेना ने ये पुस्तकें भेंट कीं। कॉलेज प्राचार्य डॉ. प्रेम बाफना ने आभार जताते हुए कहा कि आपकी पुस्तकें हमारे लिए अमूल्य उपहार हैं।



99

बहु आयामी व्यक्ति की धनी प्रभा खेतान का जीवन सभी के लिए सुंदर सिखावनी है कि किस प्रकार अपने साधारण से जीवन को सच्चे प्रयासों के जिए भव्य बनाया जा सकता है। प्रभा खेतान फाउंडेशन (कोलकाता) देश में ही नहीं, विदेशों में भी अनेक समाजोपयोगी गतिविधियां आयोजित करवा रहा है। इसी कड़ी में युवाओं में अन्तर्निहित सृजनात्मक – रचनात्मक शिक्तयों को उभार कर उनके बेहतरीन व्यक्तित्व के निर्माण के लिए संकल्पित इस फाउंडेशन की ओर से चल रहे अनेक प्रोजेक्ट में से एक है– 'बुक रेक' प्रोजेक्ट। जिसके तहत एमबीएम राजकीय कन्या महाविद्यालय, सुजानगढ़, को नामचीन लेखकों की 121 पुस्तकों में भेंट की गई। जिन्हें छात्राएं अपनी रूचि के अनुसार प्रतिदिन पढ़ रहीं हैं। निसंदेह ये पुस्तकें शिक्षको एवं छात्राओं के लिए प्रेरक और मार्गदर्शन बनेंगी। इस हेतु प्रभा खेतान फाऊंडेशन (कोलकाता) का हृदय से आभार एवं इस कार्य में महनीय योगदान देने के लिए फाउंडेशन की प्रतिनिधि प्रो. अनुपम सक्सैना (सीकर) का भी बहुत आभार। फाउंडेशन अपने संकल्प और उद्देश्यों में सफल हों। ऐसी शुभाकांक्षा।

- डॉ. प्रेम बाफना, प्रिंसिपल, एमबीएम गवर्नमेंट कॉलेज, सुजानगढ़

मास्टर भंवरलाल मेघवाल राजकीय कन्या महाविद्यालय सुजानगढ़, में प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता से प्राप्त हिंदी और अंग्रेजी की साहित्यिक पुस्तकें निश्चित रूप से ना केवल महाविद्यालय के पुस्तकालय को समृद्ध कर रहीं है बल्कि छात्राओं एवं संकाय सदस्यों के लिए भी बेहद उपयोगी हैं।। महाविद्यालय परिवार इस सहयोग के लिए सदैव आभारी रहेगा।

– डॉ शिखा अग्रवाल, व्याख्याता, राजनीति विज्ञान, एमबीएम गवर्नमेंट कॉलेज, सुजानगढ़



तुरंत ही ज्ञान की दुनिया में उतर गये छात्र

एमजीडी गर्ल्स स्कूल, जयपुर

एक खुशनुमा दोपहर थी, जब **प्रभा खेतान फाउंडेशन** ने जयपुर के एमजीडी गर्ल्स स्कूल में 'बुक रैक' का अनावरण कर स्कूल की छात्राओं को किताब रूपी संपदा सौंपी। फाउंडेशन की यह पहल समाज को कुछ समर्पित करने का एक और प्रयास है – इस बार साहित्य, किताबों, भाषाओं और संस्कृति के संरक्षण के माध्यम से किया गया।







प्रभा खेतान फाउंडेशन ने जयपुर के एमजीडी गर्ल्स स्कूल में 'बुक रैक' का अनावरण कर स्कूल की छात्राओं को किताबों रूपी संपदा सौंपी। प्रभा खेतान फाउंडेशन की यह पहल समाज को कुछ समर्पित करने का एक और प्रयास है – इस बार साहित्व, किताबों, भाषाओं और संस्कृति के संरक्षण के माध्यम से। अनावरण समारोह में राजस्थान एवं मध्य भारत मामलों की मानद संयोजक अपरा कुच्छल, प्रिंसिपल अर्चना एस. मानकोटिया, वाइस-प्रिंसिपल प्रमेंद्र खंगरोत और लाइब्रेरियन लक्ष्मी शर्मा के साथ छात्राएं भी भागीदार बनीं।

जैसे ही दान का खुलासा हुआ, छात्र उत्सुकता से 'पुस्तक रैक' के आसपास एकत्र हो गए, उनके चेहरे जिज्ञासा और प्रत्याशा से चमक उठे। पुस्तकालय की अलमारियां साहित्यिक रतों, ज्ञान और प्रेरणा के खजाने से भरी हुई थीं। अपनी जीवंत स्कूल वर्दी में छात्रों ने एक जीवंत दर्शक वर्ग बनाया, जो साहित्यिक यात्रा शुरू करने के लिए तैयार था। उनमें से कुछ तुरंत ही ज्ञान की दुनिया में उतर गये। यह देखकर ख़ुशी हुई कि छात्र अपने क्षितिज को व्यापक बनाने के लिए बहुत उत्सुक थे। अधिष्ठापन के बाद छात्रों और स्कूल के संकाय सदस्यों की कुछ खूबसूरत तस्वीरें खींचकर समाप्त हुआ।





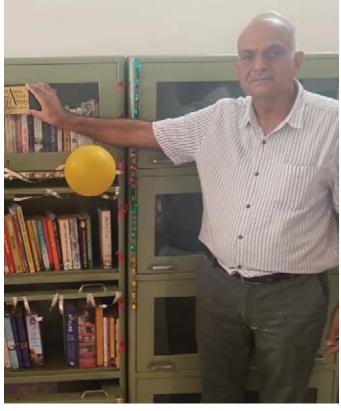


विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं क्षत्रवासियों के लिए उपयोगी

राजकीय महाविद्यालय, मलसीसर

राजकीय महाविद्यालय, मलसीसर, झुंझुनू के प्राचार्य डॉ. मनोज कुमार ने कहा कि **प्रभा खेतान फाउंडेशन**, कोलकाता ने महाविद्यालय को जो पुस्तकें भेंट की हैं, उसके लिए महाविद्यालय परिवार हृदय से आभार व्या करता है। ये पुस्तकें विद्यार्थियों, शिक्षकगणों एवं अन्य क्षेत्रवासियों के लिए उपयोगी साबित होंगी।







बालिकाओं को बहुत आवश्यकता थी इन पुस्तकों की

सावित्री बाई फुले महिला महाविद्यालय, सीकर

नि.शा, असहाय, विधवा, परित्वाकता, निर्धन छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा एवं वाहन सुविधा उपलब्ध कराने वाले सावित्री बाई फुले महिला महाविद्यालय, सीकर में बुक रैक के तहत पुस्तकें भेंट की गईं। महाविद्यालय के सचिव ओ. पी. सैनी ने कहा कि बालकाओं के लिए साहित्य की बहुत आवश्यकता थी, जिसकी पूर्ति प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता ने की है। सैनी के साथ–साथ सहायक आचार्य रेखा कंवर और तब्बसुम शेख ने भी फाउंडेशन का आभार जताया।



"एक बेहतरीन पुस्तक आपको कई प्रकार के अनुभव देती है और अंत में थोड़ा उदास भी कर देती है। उसे पढ़ते हुए आप अनेक जीवन की यात्रा कर लेते हैं।" – विलियम स्टायरन

महाविद्यालय में बालिकाओं के लिये अच्छे साहित्य की वर्तमान में बहुत आवश्यकता थी, अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान, सीकर की अध्यक्ष डॉ. अनुपमा सक्सेना के माध्यम से प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता ने इसकी पूर्ति कर दी। हमने पाया कि जब से प्रभा खेतान फाउंडेशन ने अनमोल, व्यावहारिक ज्ञान से जुड़ी हुई पुस्तकें भेंट की हैं, तब से छात्राओं की पुस्तकों के प्रति रुचि बढ़ी है। छात्राओं के व्यावहारिक एवं बौद्धिक ज्ञान में अभिवृद्धि हुई है। हम और हमारी पूरी प्रबन्ध समिति प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता का हृदय से आभार व्या करते हैं तथा इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

- ओ. पी. सैनी, सचिव, सावित्री बाई फुले महिला महाविद्यालय, राधाकिशनपुरा, सीकर

मैं प्रभा खेतान फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद करती हूं। आपके द्वारा भेंट की गई पुस्तकें मैंने पढ़ीं, सभी पुस्तकें हमारे महाविद्यालय की छात्राओं व शिक्षकगण के लिए अति उपयोगी हैं। जब मुझे बुरे विचार आते हैं, तब मैं पुस्तकें पढ़ती हूं जिससे मुझे अच्छा महसूस होता है व मार्गदर्शन मिलता है। मैं पुस्तकें पढ़कर खुद को काबिल समझने लगती हूं। आपकी पुस्तकों को पाकर हमारे महाविद्यालय के विद्यार्थी बहुत रोमांचित हुए, आपका यह प्रयास सराहनीय रहेगा, हम सभी आपके आभारी हैं। आपने महाविद्यालय को पुस्तकें प्रदान करके हमें ऐसा उपहार प्रदान किया है जो हमारे लिए जीवन भर उपयोगी है। एक बार पुनः धन्यवाद व आभार प्रभा खेतान फाउडेशन।

- रेखा कंवर, सहायक आचार्य (भूगोल), सावित्री बाई फुले महिला महाविद्यालय, सीकर

प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा हमारे महाविद्यालय को कई पुस्तकें भेंट की गईं, जिनमें से कई पुस्तकें हमारे आदर्श महापुरुषों की जीवन गाथाओं पर आधारित हैं। ये पुस्तकें काफी ज्ञानवर्धक हैं। मुझे मेरे जीवन में अब आगे क्या करना है, इसकी काफी असमंजस थी। मैंने आपके द्वारा भेंट स्वरूप दी गई पुस्तकों में से 'चाणक्य नीति' पढ़ी। चाणक्य ने कहा है कि 'अगर सफलता प्राप्त करनी है तो सदैव अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करके चलो। अगर तुम पूरी मेहनत एवं कठिन परिश्रम करोगे तो सफलता खुद तुम्हारे कदम चूमेगी। यह सब पढ़कर मुझे समझ आ गया कि अब मुझे मेरा लक्ष्य निर्धारित करके उस लक्ष्य को प्राप्त करने की पुरी कोशिश करनी है। शिल्पी झा द्वारा रचित 'मन पाखी' पुस्तक काफी प्रेरणादायक है। प्रभा खेतान फाउंडेशन का हार्दिक आभार, जिसने हमारे उज्जव भविष्य के लिए इतना सोचा।

- निशा नायक, बी.एस.सी. अंतिम वर्ष, सावित्री बाई फूले महिला महाविद्यालय, सीकर





इस भेंट से विद्यार्थियों में पुस्तकों के प्रति उत्सुकता बढ़ी

एसकेएम राजकीय पीजी महाविद्यालय

प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता की ओर से अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से एसकेएम राजकीय पीजी महाविद्यालय साहित्यिक पुस्तकें भेंट हुईं. 'बुक रैक' प्रोजेक्ट ने विद्यार्थियों को पुस्तकों के प्रति अधिक उत्सुक बना दिया, उसके लिए महाविद्यालय परिवार हृदय से आभार व्यक्त करता है।





आपके अभूतपूर्व योगदान के लिए हम आभारी

टैगोर पी. जी. कॉलेज, दांतारामगढ़

टैगोर पी. जी. कॉलेज, दांतारामगढ़ के प्रो. कवेन्द्र सिंह शेखावत और प्रो. मदन लाल जाट ने 'बुक रैक' प्रोजेक्ट के तहत ढेर सारी पुस्तकें भेंट करने के लिए प्रभा खेतान फाउंडेशन का आभार जताया और कहा कि ये पुस्तकें प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगी।



"

हमारे महाविद्यालय को उपहार स्वरूप पुस्तकें भेंट करने के लिए प्रभा खेतान फाउण्डेशन, कोलकाता का बहुत-बहुत आभार। आपका यह योगदान हमारे संस्थान के सभी विषय के प्राध्यापकों एवं अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित हो रहा है। हमें प्रभा खेतान फाउंडेशन कोलकाता द्वारा भेंट की गई पुस्तकों में संकलित कविताएं, कहानियां, साहित्य की रोचक कथाएं बड़ी ही दिलचस्प लगीं। आपके इस अभूतपूर्व योगदान के लिए हम आपके आभारी हैं।

- प्रो. कवेन्द्र सिंह शेखावत, टैगोर पी.जी. महाविद्यालय, दांतारामगढ

पुस्तक दान की इस अनूठी पहल के लिए मैं प्रभा खेतान फाउण्डेशन कोलकाता का हृदय की गहराइयों से आभार एवं धन्यवाद व्या करती हूं। आपके द्वारा हमारे महाविद्यालय को भेंट की गई पुस्तकों में संकलित पाठ्य सामग्री रोचक एवं ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ सुपाठ्य व सरल भाषा में है, जिससे हमारी अधिगम क्षमता में वृद्धि हुई है। मैं और मेरे सहपाठी आपके द्वारा भेंट की गई मां सरस्वती रूपी पुस्तकों का निरन्तर अध्ययन कर भरपूर लाभ उठा रहे हैं। पुनः आपका कोटिशः आभार एवं धन्यवाद।

- कल्पना राठौड़, रनातक तृतीय वर्ष, टैगोर पी.जी. महाविद्यालय, दांतारामगढ

प्रभा खेतान फाउण्डेशन, कोलकाता आपके द्वारा भेंट की गई विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के लिए आपका बहुत-बहुत आभार। ये पुस्तकें महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। उा पुस्तकों का अध्ययन कर छात्र-छात्राएं साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञानार्जन कर लाभान्वित हो रहे हैं। आपके द्वारा दी गई इस अनुपम भेंट के लिए हम आपका सहृदय धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते हैं।

- प्रो. मदन लाल जाट, टैगोर पी.जी. महाविद्यालय, दांतारामगढ



99

बालिकाओं को अपनी प्रतिभा को निखारने का अवसर मिले



'अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान' की नींव वर्ष 2002 में रखी गई थी। उद्देश्य था – बालिकाओं को शास्त्रीय एवं लोक नृत्य का प्रशिक्षण देना। शेखावाटी का यह एकमात्र संस्थान है जिसने इस तरह की पहल की। यह संस्था लगातार 21 वर्षों से प्रशिक्षण देकर बालिकाओं को नृत्य की बारीकियों से अवगत करा रही है। 'अभिव्यक्ति' के इस प्रयास में सहयोगी रहा है – 'प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता'। फाउंडेशन के सहयोग से वर्ष 2021 में 'शेखावाटी नृत्य शिरोमणी' का आयोजन किया गया, जिसमें शेखावाटी की विभिन्न बालिकाओं को अपनी प्रतिभा को निखारने का अवसर मिला। सहयोग के इसी क्रम में वर्ष 2022 में भारत की सुविख्यात गायिका एवं अभिनेत्री इला अरूण जी को 'शेखावाटी नृत्य शिरोमणी' कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका में आमंत्रित किया गया। फाउंडेशन द्वारा महिला सशािकरण एवं महाविद्यालय में पुस्तक दान का काम 'अभिव्यक्ति संस्थान' के माध्यम से करवाया जा रहा है। प्रशिक्षण केन्द्र के माध्यम से बड़ी संख्या में महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, पेंटिंग व बुनाई आदि का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। साथ ही, महाविद्यालयों में पुस्तकें दान कर विद्यार्थियों को सुविख्यात लेखकों की पुस्तकों के अध्ययन का अवसर प्रदान किया जा रहा है।

- **हरीश माथुर** अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान के उपाध्यक्ष हैं।

"

राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाला फाउंडेशन हमारा सहयोगी



'अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान' विगत 21 वर्षों से कला, संगीत एवं साहित्य के क्षेत्र में सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्य करता आ रहा है। इन 21 वर्षों के सफर में 'अभिव्यक्ति' को अप्रत्याक्ष रूप से प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता का सहयोग मिलता रहा है। 'अभिव्यक्ति' वह छोटा—सा पौधा है जो बालिकाओं में नृत्य व संगीत के माध्यम से संस्कार डालने का प्रयास कई वर्षों से कर रहा है। इस कार्य को देखते हुए फाउंडेशन ने 'अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान' को साहित्य के क्षेत्र में कार्य करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी, जिसमें शेखावाटी के प्रतिष्ठित अकादमिक महाविद्यालय को पुस्तक दान करने का कार्य सौंपा गया। विगत दो वर्षों में फाउंडेशन की ओर से शेखावाटी के कुल 18 महाविद्यालयों में 150 से 200 पुस्तकें प्रति महाविद्यालय अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान ने समारोहपूर्वक भेंट कीं। हमारे लिए परम हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक सरोकारों के लिए कार्य करने वाला फाउंडेशन निरंतर 'अभिव्यक्ति' को सहयोग प्रदान करता आ रहा है। इसी क्रम में फाउंडेशन एक सिलाई प्रशिक्षण केंद्र भी 'अभिव्यक्ति' के माध्यम से संचालित किया है जिसमें लगभग 50 जरूरतमंद महिलाएं सिलाई का कार्य सीख रही हैं। यह महिलाओं को आत्मिनर्भर बनाने के लिए सकारात्मक पहल है।

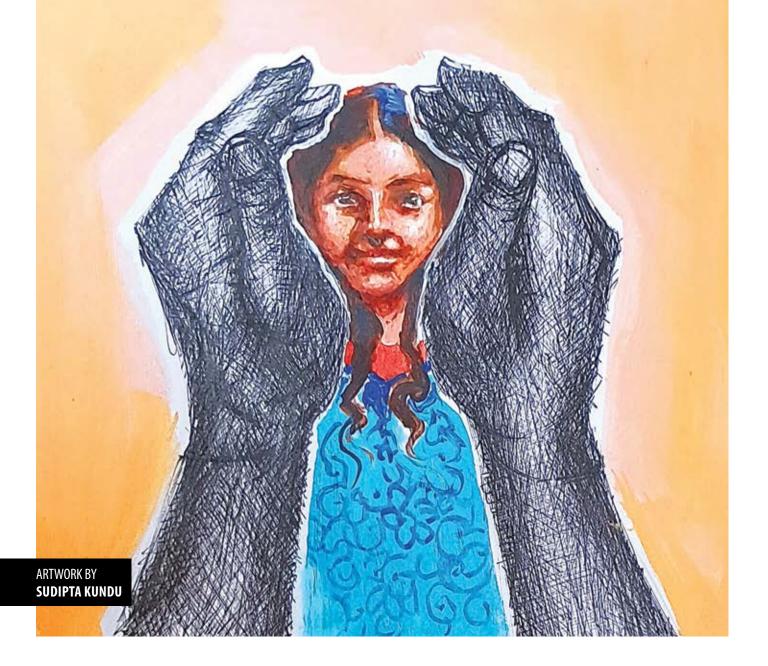
- **डॉ. नेकीराम आर्य** अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान के सचिव हैं।



A Safer World for Girl Children

If one girl with an education can change the world, just imagine what 130 million can do

— Malala Yousafzai



Probha

On National
Girl Child Day,
Prabha Khaitan
Foundation is
committed to
building a future
where every girl
feels safe, valued
and empowered
to reach her full
potential.



As the country celebrates National Girl Child Day, let us imagine an India where every girl can thrive, free from fear, discrimination and violence. Over the years, the country has faced challenges in ensuring the safety and well-being of its girl children, but steps are being taken to uplift their cause and make a difference.

The Ministry of Women and Child Development introduced National Girl Child Day in 2008 because girls in India face inherent prejudices and disadvantages. Even in 2024, many families still want sons, which leads to tragic cases of female foeticide. While it is true that the incidence of female foeticide has been dropping, girl children continue to face skewed societal imbalances. Owing to deep-seated cultural biases and economic constraints, fewer girls go to school than boys. Gender disparities are also seen in nutrition, as girls may receive less food and care than boys, which hampers their health

and development. Other dangers are trafficking and child marriage, which deprive vulnerable young girls of opportunities to flourish and expose them to adverse health and psychological consequences.

To tackle these issues, a multi-faceted approach is needed — one that combines legal reforms, education and community

Glimmers of Hope

- Female child marriage rates dropped significantly, from 47.4% in 2005-06 to 23.3% in 2019-21
- India's sex ratio at birth climbed from 898 to 907 females per 1,000 males between 1999 and 2019
- Educated girls joining India's workforce could add USD 770 billion to our GDP by 2025

empowerment to dismantle gender norms and implement policies that ensure equitable access to education, opportunities and well-being for all children. With this in mind, the Government of India has implemented various initiatives to empower and uplift the girl child. For example, while "Beti Bachao, Beti Padhao" seeks to improve the status of girl children, promote education and address social evils like female foeticide, financial schemes like Sukanya Samriddhi Yojana encourage parents to build savings for their daughters.

Efforts are being made at every level to break gender stereotypes, enhance educational opportunities and ensure a brighter future for girls across the country. We owe it to our girls to build a nurturing environment where they can break the cycle and achieve their dreams.

MUSIC OF THE MONTH





An Ode to the Mountains

In a powerful start to 2024, **Prabha Khaitan**Foundation has chosen a captivating musical ode to the Himalayas as its Music of the Month. Named after the mighty mountains of Asia, "Himalayas" is a collaboration between Grammy-winning music composer Ricky Kej and rock legend Stewart Copeland. The track fuses Eastern and Western musical strains and bows to the life-giving power of the world's highest mountain range.

For Kej, in particular, nature and the environment have long been recurring themes. Consider, for example, his National Award-winning musical score for *Wild Karnataka*, a natural history film that was beautifully narrated by none other than Sir David Attenborough. The composer also holds influential roles like the United Nations (UN) Goodwill Ambassador and Ambassador for Earth Day Network, and he was honoured as a Global Humanitarian Artist by the UN in 2022.

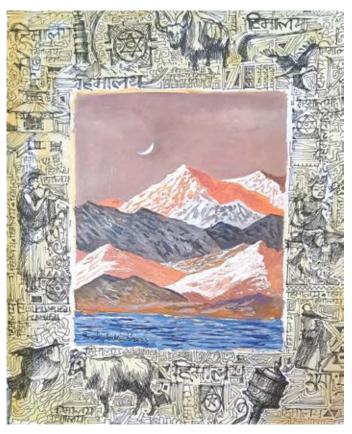
Copeland, on the other hand, is widely known as the drummer for the influential rock band The Police. Having produced hits like "Roxanne," "Every Breath You Take" and "Message in a Bottle," the band achieved global success throughout the late 1970s and 1980s. After The Police disbanded, Copeland pivoted to composition, creating diverse musical scores for not just films and television but also orchestras and ballet.

Working together, Kej and Copeland have often married music with activism. In December last year, they performed at the historic UN COP28 Climate Change Conference in Dubai, which drew around 85,000 attendees, including over 150 heads of state. Before that, the duo had joined hands for *Divine Tides*, a Grammy-winning album featuring artists around the globe and offering a musical canvas for a sustainable world that can adapt to change.

January's Song

Himalayas

A musical soundscape composed by Kej and Copeland for their acclaimed album *Divine Tides*, "Himalayas" evokes the grandeur and life-sustaining powers of the mighty mountain range. The track pays tribute to the world's third-largest freshwater source, home to some of the highest peaks in the world and nourishing every living being on the planet in one way or another. In a fitting tribute, our Music of the Month transports the audience to an altitude of 12,000 feet in Leh, Ladakh, immersing them in the heart of this life-giving range.





The Literary Heritage of Little Magazines

Delving into the cultural wealth of India's regional literature is the focus of **Prabha Khaitan Foundation's Aakhar** initiative. At a recent session of **Aakhar** Bengal, writers Kamal De Sikder and Partha Sarathi Gayen chatted about the role and impact of little magazines in West Bengal and the challenges they face today.

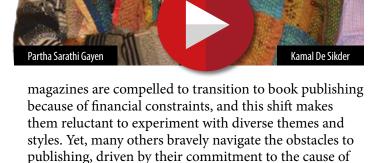
Soumitra Mitra, the founder of Bengali theatre group Purba Paschim, introduced Sikder, a veteran of

little magazines in Bengal, and Gayen, a former high-ranking civil servant who is a passionate writer. Mitra also touched upon the importance of little magazines in Bengal. "Without little magazines, literature cannot be understood," he said.

As the talk commenced, Sikder said, "Little magazines have a rich history of persistent existence." He shed light on how little magazines have supported creativity by showcasing emerging and established writers and allowing the exploration of diverse themes. "These publications serve as sanctuaries for our creative musings, offering a platform for dissenting views on contemporary issues. Little magazines are a haven for divergent perspectives. They challenge prevailing notions. Ezra Pound initiated the concept of little magazines, a legacy we have faithfully upheld," he noted. Gayen agreed, adding that little magazines possess the capability to convey unfiltered truths.

Unlike mainstream publications, little magazines usually abstain from advertisements, which makes their sustained publication challenging. Gayen addressed some of these challenges while conversing with Sikder. "In English, there's a saying: 'publish or perish'. The publication serves as a pathway to attain a form of immortality, contributing to societal progress through active newspapers and magazines. However, publishers constantly grapple with both financial and social challenges, often finding it difficult to balance their professional commitments with personal responsibilities," he said.

Gayen explained that sometimes the publishers of little



As the discussion moved to the rise of censorship, Sikder noted that the essence of little magazines lies in their capacity to voice dissent against the established systems. "Unfortunately, in the current landscape, we are witnessing the stifling of such dissent, with poets facing censorship from those in positions of authority. But I want to trust in the ability of our brave publishers," he said.

Later, Sikder and others recited short poems that enthralled the audience and drew the insightful session to a close.

> Aakhar Bengal was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with Purba Paschim and digital media partner Anandabazar Patrika Online







32

Jagdish Giri

भाषा की कलात्मकता, संवेदना से ही सृजन होता है: आखर में श्याम जांगिड़ से संवाद

कित्य सृजन के अंतर्गत कहानी और उपन्यास के पात्रों के लिए अलग से सोचना नहीं पड़ता है। समाज जीवन में जो हम देखते हैं, उसी को लेकर मन की संवेदना से वह पात्र हमें मिल जाते हैं। हमारे आसपास की घटनाओं से ही साहित्या सृजन की प्रेरणा मिलती है।" यह बात विरष्ठ साहित्याकार श्याम जांगिड़ ने प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा आयोजित आखर कार्यक्रम में जगदीश गिरी से संवाद करते हए कही।

गिरी ने उनसे पूछा कि साहित्य में आपकी रुचि कैसी जगी और आपने कब लिखना शुरू किया? जांगिड़ ने बताया कि कक्षा 9 में पढ़ते समय लेखन में रुचि जगी तो शुरुआत हिंदी में व्यंग्य लेखन से की। आगे चलकर व्यंग्य और आलोचना लिखना चूना और कई वर्षों तक इसी

विधा में लिखना जारी रखा। इस दौरान कई पुरस्कार और सम्मान भी प्राप्त किए। राजस्थानी भाषा में लेखन से जुड़े सवाल पर जांगिड़ ने बताया कि लगभग 38–40 साल पहले पिलानी के नागराज शर्मा ने राजस्थानी में लेखन के लिए प्रेरित किया। लिखना शुरू किया तो लेखन और सम्पादन अभी भी जारी है। ढूंढ़ाड़ी, हाड़ौती, मेवाड़ी, शेखावटी सहित सभी बोलियां हमारी राजस्थानी भाषा की ताकत है। राजस्थानी की आधुनिक कहानियों का भी सम्पादन किया है और राजस्थानी में लेखन के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए। यह जरूर है कि राजस्थानी में अभी पत्र– पत्रिकाएं कम हैं फिर भी लेखन कार्य काफी बढा है।

जांगिड़ ने कहा कि साहित्य की विधाओं में कहानी लिखना काफी कठिन है। इसके लिए सोचना पड़ता है। मैं किसी लेखन की विधा पर टिप्पणी नहीं कर रहा हूं लेकिन व्यंग्य लिखना आसान है। हालांकि यह भी साहित्यिक कला है। कहानी में रूपक उठा कर लेखन करना होता है और यह कठिन कार्य है। उन्होंने बताया कि नंद भारद्वाज से राजस्थानी सीखी और इनका साहित्या भी पढ़ा। भाषा की कलात्मकता, संवेदना से ही सृजन होता है। अपनी पुस्तक 'अंक सती री आत्मकथा' सहित कई पुस्तकों में महिलाओं की पीड़ा दर्ज करने का कोई विशेष कारण है? के उत्तर में जांगिड़ ने कहा कि संवेदना महिला के पास अधिक होती है। पुराने समय में महिलाओं ने काफी संघर्ष भी किया है। हमारे समाज

में स्त्री संघर्ष, सहनशक्ति, संवेदना और प्रेम की प्रतिमूर्ति है और इसलिए जब भी भाव पूर्ण लेखन की बात आती है स्त्री पर लिखना अति आवश्यक है।

Shyam Jangir

अपनी कहानी सुनाते हुए जांगिड़ और उनके साथ श्रोता भी भावुक हो गए। उन्होंने अपनी कहानियों और व्यंग्य के अंश सुनाए। संचालन प्रदक्षिणा पारीक ने किया। उन्होंने बताया कि जांगिड़ को राजस्थान

साहित्य अकादमी, उदयपुर का डॉ रांगेय राघव कथा सम्मान, राजस्थानी भाषा और संस्कृति अकादमी, बीकानेर से

शिव चंद भारतीय गद्य पुरस्कार, भरत व्यास सम्मान, मनुज सम्मान, डूंडलोद विद्यापीठ का शारदा पुरस्कार, लाल बहादुर शास्त्री सम्मान आदि प्राप्त हो चुका है। आपके उपन्यास पर रेडियो और टीवी पर वार्ताएं प्रसारित हुई हैं। हिंदी में कहानी संग्रह 'जुड़े हुए फासले', एकला चलो रे, कटा हुआ समय; उपन्यास प्रेम गली अति सांकरी, न होने का दर्द,

पदास हथेलियां और यात्रा वृत्तांत महाकाल की जटाओं में दस दिन प्रकाशित है। राजस्थानी में कहानी संग्रै अेक सती री आखरी परिकमा; उपन्यास नौरंगजी री अमर कहाणी, गोमती भाभी; व्यंग्य संग्रै म्हारो अध्यक्षता कांड और संपादित पुस्तक राजस्थानी री आधुनिक कहाणियां, डोगरी कथावां शामिल है।

ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के प्रमोद शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर नंद भारद्वाज, शारदा कृष्ण, राजेन्द्र मोहन शर्मा, लोकेश कुमार साहिल, डॉक्टर नीरज रावत, माधव सिंह, अवंतिका दलवी आदि उपस्थित थे।

आखर राजस्थान का आयोजन श्री सीमेंट की सीएसआर पहल के तहत हुआ। सहयोगी ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन और हॉस्पिटैलिटी पार्टनर आईटीसी राजपूताना हैं।

Kalpana Chaudhary

Aanchal Garcha





मैं कितना भी दुखी हूं एक ग़ज़ल में अपना सारा गुस्सा उतार देता हूं: शकील जमाली

म से कम बातों में बड़ी – सी – बड़ी बात, ये ग़ज़ल का कमाल होता है। "यह बात प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से आयोजित लफ़्ज़ रायपुर में अतिथि वाा शकील जमाली ने कही। रायपुर में लफ़्ज़ का यह पहला आयोजन था। उर्दू, फारसी, अरबी को बढ़ावा देने के लिए रेख़्ता फाउंडेशन के सहयोग से 'लफ़्ज़' फाउंडेशन की एक अनूठी पहल है। फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य लेखक और उसके पाठकों के बीच की दूरियों को कम करना है।

शुरुआत में आयोजकों की ओर से अहसास वूमेन आंचल गार्चा ने स्वागत भाषण दिया। हयात रायपुर के जीएम अमित पॉल ने सभी का औपचारिक स्वागत किया। गार्चा ने अतिथि वक्ता जमाली का परिचय देते हुए कहा कि उन्होंने राजनीति विज्ञान में एमए किया है। उनके कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी पहली पुस्तक 'धूप तेज हैं' १९६९ में प्रकाशित हुई, उसके बाद 2014 में उर्दू में 'कटोरी में चांद' और 2023 में 'मौज में बंजारा ' प्रकाशित हुई। उनकी पुस्तक 'मौलिसरी के फूल ' ग़ज़ल संग्रह के रूप में जल्द ही आने वाली हैं। उन्हें उर्दू के लिए अकादमी दिल्ली द्वारा शायरी के क्षत्र में सम्मान भी मिला है और उनकी ग़ज़ल अल्ताफ राजा ने गाई है।

Shakeel Jamali

गार्चा के स्वागत भाषण के बाद अहसास वूमेन की ओर से शिक्षिका तथा निदेशक ऑरोमिरा सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस कल्पना चौधरी ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाया और

जमाली ने अपने बेहतरीन ग़ज़लों, नज़्मों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध किव मीर अली ने जमाली को स्मृति चिन्ह भेंट किया। उन्होंने सवाल – जवाब सत्र में भी हिस्सा लिया। कार्यक्रम के अंत में अहसास वूमेन सृष्टि त्रिवेदी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

लफ़्ज़ रायपुर का आयोजन **अहसास** वूमेन की सहभागिता और श्री सीमेंट की सीएसआर पहल के तहत हुआ। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर हयात रायपुर हैं।









Azra Naqvi





कना नहीं है, कुछ ना कुछ मिल जाता है पाज़िटव करने के लिए।" यह प्रेरणात्मक उति शिक्षिका, लेखिका, शायरा और समाजसेवी अजरा नकवी के हैं। आप प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से रेख़्ता फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित लफ़्ज़ लखनऊ में बतौर अतिथि वाा बोल रही थीं। आरम्भ में आयोजकों की ओर से अहसास वूमेन दीपा मिश्रा ने फॉउन्डेशन से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लफ्ज़ का यह आयोजन फॉउन्डेशन की 'अपनी भाषा अपने लोग' को बढ़ावा देने की पहल का हिस्सा है। ताज लखनऊ के महाप्रबंधक विनोद पांडे ने औपचारिक स्वागत किया।

मिश्रा ने अतिथि वाा नकवी का विस्तृत परिचय देते हुए कहा कि आपने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, जे.एन.यू. और कनाडा की कॉनकॉर्डिया विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। महिलाओं के लिए सामुदायिक कार्यकर्ता की भूमिका निभाई तथा दक्षिण एशियाई थिएटर ग्रुप 'तीसरी दुनिया' का आयोजन किया। कनाडा में किंडरगार्टन शिक्षक के रूप में सेवाएं दी और अभी रेख़्ता फाउन्डेशन के साथ भी जुड़ी हैं। आपने सउदी लेखिकाओं की कहानियों की संकलन का अनुवाद किया तथा सउदी प्रतकार की जीवनी 'मेरे शव पर रोज' के अलावा कवियात्री सैदा फरहद की कविताओं का संकलन किया।

अहसास वूमेन लखनऊ से कनक रेखा चौहान ने नकवी से बड़ी ही रोचक बातचीत कर इस शाम को यादगार बना दिया। नकवी ३६ साल देश के बाहर रहकर सामुदायिक सेवा में बहुत काम किया और 'साउथ एशिया कम्युनिटी सेंटर' नाम से एक एनजीओ की शुरुआत की। इस सृत पर उनकी किताब 'उर्दू शब्दों का गुलदस्ता 'का अनावरण हुआ । ए.ए.एम.यू. की वैज्ञानिक डॉ. कमर रहमान ने इस किताब का विमोचन किया और एक खूबसूरत दुपट्टे से उनका अभिनंदन किया। सवालात के सृत में नकवी ने श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर दिए और अपनी

Kanak Rekha Chauhan







रुकना नहीं है, कुछ ना कुछ मिल जाता है पाज़टिव करने के लिए। नज्में और शायरी सुनाकर इस समारोह को मनमोहक बना दिया। अहसास वूमेन लखनऊ डिंपल त्रिवेदी ने धन्यवाद व्या किया।

लफ़्ज़ लखनऊ का आयोजन **अहसास** वूमेन की सहभागिता और श्री सीमेंट की सीएसआर पहल के तहत हुआ। सहयोगी लखनऊ एक्सप्रेशंस, हॉस्पिटैलिटी पार्टनर ताजमहल लखनऊ और हिंदी मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण हैं।







साइल हल न होंगे खुदकुशी से, उलझना ही पड़ेगा जिंदगी से. दिल को छू लेने वाली यह शायरी इरशाद खान सिकंदर ने प्रभा खेतान फाउंडेशन और रेख़्ता फाउंडेशन द्वारा संयुा रूप से आयोजित लफ़्ज़ जयपुर में सुनाई। वे इस आयोजन में बतौर अतिथि वाा उपस्थित थे।

आयोजकों की ओर से अहसास वूमेन और प्रभा खेतान फाउंडेशन की

राजस्थान और मध्य भारत मामलों की मानद समन्वयक अपरा कुच्छल ने अतिथि वक्ता शायर एवं लेखक सिकंदर का परिचय देते हुए कहा आपने हिंदी, उर्दू और भोजपुरी के सांस्कृतिक परिदृश्य में पुख्ता पहचान बनाई है। आप अरबी और उर्दू भाषाओं को बढ़ावा देने की दिशा में काम कर रहे हैं और उससे जुड़े साहित्य को सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं। एक आला दर्जे के ग़ज़लकार और गीतकार होने के साथ ही आपको संपादन का तजुर्बा भी हासिल है। आपको बहुत सारे पुरस्कार भी मिले हैं।

डॉ बकुल देव ने उनसे संवाद किया। बातचीत के दौरान सिकंदर ने अपनी शायरी की यात्रा का विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि अक्सर वह इस बात से कुंठाग्रस्त रहते थे कि गीत लिखना एक बहुत ही एक मामूली काम है। इसी शायरी की वजह से उन्हें काफी तिरस्कार भी मिला। इसीलिए उनके अंदर एक जिद पैदा हुई और उन्होंने शायरी को एक इज्जतदार पेशा बनाने का निर्णय ले लिया। देव ने उनसे उनकी पुस्तक 'दूसरा इश्क 'और 'आंसुओं का तर्जुमा ' की भी चर्चा की।

> सिकंदर की चर्चित नज्मों एवं शायरी ने जयपुर की इस शाम को और भी रोचक और दिलचस्प बना दिया। उन्होंने सवाल-जवाब स्त्रा में दर्शकों के सवालों के भी उत्तर दिये। अंत में अहसास वूमेन की ओर से कुलसूम मलिक ने सिकंदर और देव को जयपुरी हस्तशिल्प से निर्मित स्मृति चिन्ह भेंट किया। कुच्छल ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए उल्लेख किया कि फाउंडेशन हमेशा ही हस्तशिल्प को समर्थन देता आ रहा है।

लफ़्ज़ जयपुर का आयोजन **अहसास** वूमेन की सहभागिता और श्री सीमेंट की सीएसआर पहल के तहत हुआ। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर आईटीसी राजपूताना हैं।













Shefali Rawat Agarwal

न्निलंदा विश्वविद्यालय जब जलाया गया, तो छह महीने तक वह जलती रही, वहां इतनी पुस्तकें थीं। वहां पुस्तकें तो जलीं, पर ज्ञान को नहीं जलाया

जा सकता। इसलिए हमारे वेद, उपनिषद पुराण आदि आज तक हैं क्योंकि उन्हें सिर्फ लिखा नहीं गया था बल्कि हृदयंगम किया गया था।" यह बात लेखक, विद्वान, प्रोफेसर डॉ सिचदानंद जोशी ने प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा आयोजित 'कलम कोलकाता' में कही। आयोजकों की ओर ताजा टीवी व छपते—छपते के प्रमुख विश्वम्भर नेवर ने ज्ञान, संस्कृति, धरोहर, कला और कारोबार की धरती कोलकाता में अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने प्रख्यात नारीवादी, लेखिका, उद्यमी और परोपकारी डॉ प्रभा खेतान को याद किया और कला, साहित्य, शिक्षा और संस्कृति के साथ ही महिला सशीकरण के क्षेत्र में फाउंडेशन के कामों की चर्चा की। उन्होंने 'कलम' का परिचय दिया और बताया कि फाउंडेशन की गतिविधियां भारत और विदेश के पचपन से भी अधिक शहरों तक पहंच चुकी हैं।

नेवर ने अतिथि वाक्त डॉ जोशी का भी विस्तार से परिचय दिया और बताया कि संप्रेषण कौशल, व्यक्तित्व विकास, लैंगिक समानता, सामाजिक सरोकार, समरसता, सांस्कृतिक धरोहर – चिंतन, व्याख्यान और लेखन आपका प्रिय क्षेत्र है। आपकी दस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित और चर्चित हैं। आपने पांच नाटकों का भी लेखन किया, तो पचीस से अधिक नाटकों का निर्देशन भी किया है। आप कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपित और कर अ माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलसचिव भी रहे हैं। व्यक्त आपने खूब कविताएं भी लिखीं और आपका कविता—संग्रह 'मध्यांतर' काफी चर्चा में रहा है। पत्रकारिता इतिहास पर लिखी पुस्तकों के अलावा 'कुछ अल्प विराम', 'पलभर की पहचान' और 'जिंदगी का बोनस' जैसी आपकी कृतियां खूब लोकप्रिय हुई हैं। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव हैं। उन्होंने संवादकर्ता की भूमिका में उपस्थित जानीमानी अभिनेत्री और नेत्री रूपा गांगुली का भी परिचय दिया।

अपने लेखक और शिक्षाविद होने से जुड़े सवाल के उत्तर में डॉ जोशी ने घर के साहित्यिक वातावरण और प्रख्यात लेखिका मां मालती जोशी को याद किया। उन्होंने बताया कि मां का साहित्यकार और लेखक होना हमेशा ही प्ररेणादायक रहा। वैसे भी मां पहली गुरु होती हैं। पिता जी इंजीनियर थे। जब उनका तबादला मुरैना के एक गांव में हुआ जहां बिजली तक नहीं थी, तो मां को चिंता हुई कि उनके बच्चे कहीं पिछड़ न जाए। ऐसे में वे साहित्य की अच्छी-अच्छी पुस्तकें मंगवातीं और हमें पढ़ कर सुनाती थीं। हिंदी और मराठी साहित्या हमने उनसे ही सुना। इसका असर यह हुआ कि बड़े होने पर हमारी नजर कभी भी निम्नतर साहित्य की ओर गई ही नहीं।

नाटकों से जुड़े प्रश्न पर डॉ जोशी ने कहा कि साहित्य जीवन में मेरे दिल के करीब नाटक ही है और वही रहेगा। नाटक हम सभी के जीवन से जुड़ा है।

> हम पग–पग पर नाटक करते हैं। नाटकों ने मुझे बहुत कुछ दिया है। नाटक में त्वरित अभिव्यक्ति होती है। आंखों को पढ़ा जा सकता

है। प्रतिक्रियाएं देखी और अनुभव की जा सकती हैं। यह जीवंतता अन्य किसी विधा में नजर नहीं आती। एक सवाल के उत्तर में डॉ जोशी ने कहा कि हम अपनी संस्कृति पर गर्व बोध नहीं करते। इसके कारण ही समस्या है। हम पर हजार वर्षों तक विदेशियों का शासन था। डॉ जोशी ने दावा किया कि विदेशों में भारत को महान संस्कृति वाले देश के रूप में देखा जाता है। जिस दिन हमें खुद में यह गर्व बोध होगा उसी दिन हम खुद की संस्कृति को लेकर

संशकित होना छोड़ देंगे। हमारे बच्चे अपनी भाषाओं में बात नहीं करते इस पर हमें गर्व बोध होता है, यही समस्या है। मैंने अपने लेखन के माध्यम से यही प्रयास किया है कि नई पीढ़ी हिंदी पढ़ने को प्रेरित हो। दर्शकों के अनुरोध पर उन्होंने कविता और कहानी का पाठ

भी किया।

अभिनेत्री गांगुली ने कहा कि उन्हें गर्व है कि वह बंगालन हैं। उन्होंने हिंदी सीखने की अपनी कोशिशों को भी याद किया और डॉ जोशी को अंतर्मन को छूने वाला लेखक बताया। अंत में आयोजकों की

ओर से सीवी अरुणा ने डॉ जोशी और अंजू सेठिया ने गांगुली उत्तरीय पहना कर अभिनंदन किया। अहसास वूमेन कोलकाता शेफाली रावत अग्रवाल ने आभार व्यक्त किया।

> कलम कोलकाता का आयोजन अहसास वूमेन की सहभागिता और श्री सीमेंट की सीएसआर पहल के तहत हुआ। सहयोगी डिजिटल मीडिया पार्टनर द टेलीग्राफ माई कोलकाता और आनंदबाज़ार कॉम हैं







ये स्त्री धन ही क्यूँ रहें।" ये कहना है प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा आयोजित अपनी भाषा अपने लोग कार्यक्रम के कलम फरीदाबाद की अतिथि वाक्त, मशहूर कवित्री, कथाकार, प्राध्यापक डॉ. अनामिका का।

आयोजकों की ओर से सोनिया श्रीवास्तव ने सबका स्वागत करते हुए कला, साहित्य, संस्कृति और नारी सशिकरण के क्षत्र में फाउंडेशन के अनिर्वचनीय योगदान पर प्रकाश डालते हुए सत्र का आरंभ किया। फाउंडेशन द्वारा देश विदेश में आयोजित विभिन्न अन्य कार्यक्रमों को उजागर करते हुए सोनिया ने सत्र को आगे

अनामिका का जन्म १६६३ में बिहार के मुजफ्फरपुर में हुआ। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से एमए , पीएचडी, डीलिट की उपाधि हासिल की और सत्यावती कॉलेज की अध्यापिका बनी। अनामिका ने गद्य पद्य, अनुवाद, आलोचना, कथा लिखा जिनमें से 'त़न धरी ओट', 'गलत पते की चिट्ठी ',' समय के शहर में,' 'खुरदरी हथेलियाँ 'आदि बहुत चर्चित हैं।

सफर के साथ साथ प्राचीन कथाओं तथा आधुनिक युग में उनके योगदान पर विशेष चर्चा की। उन्होंने बड़ी सरलता से कई आध्यात्मिक विषयों को प्रस्तुत किया और गुप्ता के अनुरोध पर अपने कुछ कविताएँ भी सुनाई जिनमें 'नमक'

Anand Mehta, Anamika and Shweta Aggarwal

अत्यंत प्रशंसनीय है। ऐसी चित्तरंजक एवं मनमोहक चर्चा सत्र अत्यंत ही सफल और संतोषप्रद रही।

कार्यक्रम के अंत में आनंद मेहता और श्वेता अग्रवाल ने अतिथि वाा को स्मृति चिन्ह प्रदान किया और श्रीवास्तव ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। दर्शकों को अनामिका की हस्ताक्षरित पुस्तक भी प्रदान की गई।

कलम फरीदाबाद के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट, ह्यूमन फाउंडेशन और मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का सहयोग मिला।





सबसे ज्यादा हिन्दी साहित्य बिहार में ही पढ़ा जाता है: अशोक वाजपेयी

पटना पुस्तक मेले के मुख्य मंच पर प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा कलम विशेष का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध किव तथा लेखक अशोक वाजपेयी ने शिरकत की। उन्होंने कहा, "हमें ऐसा समाज बनाना होगा जहां पुस्तकों के प्रति लोगों में प्रेम हो।" आरंभ में अतिथियों का स्वागत अहसास वूमेन पटना अनुभा आर्या ने किया। संवाद सत्र का संचालन अन्विता प्रधान ने किया।

इस सत्र में पटना कॉलेज के प्राचार्य प्रो. तरुण कुमार के साथ

लेखक को कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए और सच के साथ खड़ा होना चाहिए। वार्तालाप करते हुए वाजपेयी ने जिक्र किया कि साहित्य समाज अकेले होने का अवसर देता है, जो समय के साथ जरूरी भी है। वार्तालाप को आगे बढ़ाते हुए वाजपेयी ने आरंभ के दिनों की अपनी मुश्किलों को याद किया। उन्होंने प्रेम पर अपना मत रखा और उसकी व्याख्या करते हुए कहा कि देश में पहले प्रेम करना असामाजिक व गलत समझा जाता

था। बल्कि वे खुद लोगों के विमर्श के पात्र बने थे जब मां की सुंदरता पर

लिखी उनकी पहली कविता छपी थी। इसे लेकर देश में काफी हंगामा भी मचा था।

वाजपेयी ने कहा कि लेखक को कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए और सच के साथ खड़ा होना चाहिए। शायद इसीलिए सबसे अविचलित, संत कवियों जैसे कवि शमशेर बहाद्र थे। इसी तरह हिंदी के प्रमुख कवि



मुिाबोध का कविता – संग्रह 'चाँद मुंह टेढ़ा ' उनके जीवनकाल के बाद छपा था। इस उदाहरण से अपना दुख प्रकट करते हुए वाजपेयी ने कहा कि हम लेखकों की इज्जत करने वाला समाज नहीं बना पाए, जिसका मलाल हमेशा रहेगा। एक यहूदी कविता का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इंसान के सामने हंसो पर भगवान के सामने रोया करो, अभी तक मुझे भगवान नहीं मिले, ऐसे में लोगों के बीच हमेशा हंसता रहता हूं।

कलम पटना का आयोजन अहसास वूमेन की सहभागिता और श्री सीमेंट की सीएसआर पहल के तहत हुआ। सहयोगी नवरस स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, हॉस्पिटैलिटी पार्टनर होटल चाणक्य और हिंदी मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण हैं।











इश्क का रंग ऐसा कि कहीं भी खिल जाएगा: पटना पुस्तक मेला के कलम विशेष में संजीव पालीवाल

इश्क करना बहुत आसान है। यह आसानी से हो जाता है लेकिन असल मुश्किलें इसके बाद पैदा होती हैं। मेरा उपन्यास में दरअसल दो पीढ़ियों का इश्क है। एक आज की पीढ़ी है, जिसका अपना संघर्ष है और दूसरी पीढ़ी वो है, जो 1990 के दशक में बड़ी हो रही थी। उसकी अपनी कहानी है।" यह बात पटना पुस्तक मेला के दौरान कलम पटना के विशेष सत्र में अतिथि संजीव पालीवाल ने कही। आरंभ में आयोजकों की ओर से प्रभा खेतान फाउंडेशन और अहसास वूमेन की प्रतिनिधि............ ने उनका स्वागत किया। फाउंडेशन की गतिविधियों के परिचय के साथ उन्होंने अतिथि वाक्त का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि एंकर, स्टोरी टेलर और पत्रकार पालीवाल अब तक तीन उपन्यास 'नैना', 'पिशाच' और 'ये इश्क नहीं आसां' लिख चुके हैं।

पालीवाल 'आज तक' चैनल में प्रबंध संपादक हैं। सोशल मीडिया पर विशेष अंदाज में इश्क कविताओं का पाठ भी चर्चित है। मणिभूषण से बातचीत में पालीवाल ने बताया कि इश्क मेरे नए उपन्यास का आधार है। मैं चाहता हूं कि युवा इसे पढ़ें। उन्होंने बताया कि इश्क के अलावा इसमें ऐसी महिलाओं का संघर्ष भी है, जिन्होंने मुश्किल हालातों में भी प्रेम किया। उन्होंने कहा कि इश्क का रंग ऐसा है कि वह कहीं भी खिल जाएगा।

इस उपन्यास में पालीवाल समाज की कहानी भी है। जब मैं बड़ा हो रहा था, तो मुझे बताया गया कि हमारे समाज में रक्षाबंधन का त्योहार नहीं मनाया जाता। इसके पीछे की एक कहानी बताई गई कि रक्षाबंधन के दिन ही किसी आक्रांता ने पालीवाल समाज पर हमला किया था। बड़ी संख्या में लोग मारे गए थे. औरतों ने जौहर कर लिया था। मैंने इसके पीछे की भी सचाई का पता लगाने की भी कोशिश की। पालीवाल समाज के लोग कोई 700 साल पहले राजस्थान के अलग—अलग हिस्सों में जाकर बस गए थे। जैसलमेर में पालवील समाज के 84 गांव हैं, इन्हीं में से एक गांव कुलधरा है, जिसे भूतहा माना जाता है। हम कुलधरा गांव के रहने वाले हैं। हमारा वंश वहीं से शुरू हुआ। अंत में धन्यवाद ने जापित किया।

कलम पटना के इस विशेष सत्र का आयोजन अहसास वूमेन की सहभागिता और श्री सीमेंट की सीएसआर पहल के तहत हुआ। सहयोगी नवरस स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, हॉस्पिटैलिटी पार्टनर पटना पुस्तक मेला और हिंदी मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण हैं।



अनंत विजय की नई पुस्तक 'ओवर द टॉप: ओटीटी का मायाजाल'

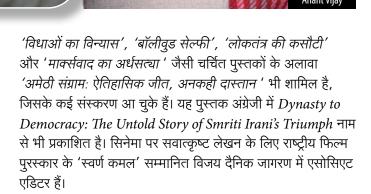
का देवार्पण

भा खेतान फाउंडेशन ने अयोध्या के राज सदन स्थित रॉयल पैलेस में प्रतिष्ठित पत्रकार और लेखक अनंत विजय की नई हिंदी पुस्तक, 'ओवर द टॉप: ओटीटी का मायाजाल' के अनावरण के साथ अयोध्या में 'किताब' के अपने नए चैप्टर की शुरुआत कर अपनी सांस्कृतिक और साहित्यिक यात्रा का विस्तार किया।

फाउंडेशन ने हाल ही में भारत और विदेश के पचपन से भी अधिक शहरों में अपने सांस्कृतिक और साहित्यिक पदचिह्न का विस्तार करते हुए, न्यूयॉर्क, भूटान और उत्तर-पूर्व भारत के सात राज्यों के कुछ प्रमुख शहरों को शामिल किया, जिसमें भगवान राम की नगरी अयोध्या का नवीनतम जुड़ाव शामिल है। इससे पहले भी जुलाई 2023 में फाउंडेशन ने अयोध्या में तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 'रामायण कला उत्सव' का आयोजन कर इस ऐतिहासिक, पौराणिक, पावन नगरी में अपनी छाप छोडी थी।

किताब अयोध्या में अतिथियों के आरंभिक परिचय के पश्चात लखनऊ अहसास वूमेन दीपा मिश्रा ने फाउंडेशन और उसके द्वारा संचालित बहुआयामी सांस्कृतिक और साहित्यिक पहल का परिचय दिया। स्वागत वाव्य अयोध्या राज परिवार के सदस्य और किव, संगीत और सिनेमा विद्वान यतीन्द्र मिश्र ने दिया। इसके पश्चात अयोध्या राज परिवार के प्रमुख और राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के न्यासी बिमलेंद्र मोहन प्रताप मिश्र ने शहर की अन्य बड़ी हस्तियों की उपस्थिति में औपचारिक रूप से विजय की पुस्तक का अनावरण किया। विजय इस कार्यक्रम से पहले नवनिर्मित श्री राम मंदिर में अपनी पुस्तक 'ओवर द टॉप: ओटीटी का मायाजाल' का देवार्पण कर चुके थे।

इस कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य लोगों में अयोध्या के मेयर गिरीश पित त्रिपाठी, एसएसपी अयोध्या राज करण नैय्यर, पंडित मिथिलेश नंदिनी शरण, अयोध्या मंडल के आयुा गौरव दयाल, लेखक पत्रकार मनोज राजन त्रिपाठी के अलावा समाज के कई अन्य वरिष्ठ नागरिक और गणमान्य सदस्य उपस्थित थे। याद रहे कि स्तंभकार, पत्रकार, संपादक, लेखक, समीक्षक विजय ने विभिन्न विधाओं में कई पुस्तकें लिखी हैं और वे लेखन के लिए कई पुरस्कार, सम्मान भी पा चुके हैं। उनकी चर्चित प्रकाशित पुस्तकों में 'प्रसंगवश', 'कोलाहल कलह में',



दरअसल 'ओवर द टॉप: ओटीटी का मायाजाल' पुस्तक इस माध्यम की व्यापक पहुंच, बेशुमार लोकप्रियता और उसके खतरों के साथ-साथ उसके वर्तमान और भविष्य का भी अवलोकन करती है। विजय उन खतरों की ओर भी सजग हैं, जो इस माध्यम से युवाओं तक पहुंच रहे हैं और उनके दिमाग को भी प्रभावित कर रहे हैं। विजय सचेत करते हैं कि ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर दिखाई जानेवाली सामग्री में बहुधा गालियों की भरमार, यौनिकता और नग्नता का प्रदर्शन, जबरदस्त हिंसा और खून-खराबा, अल्पसंख्यकों की स्थिति को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणियां और कई बार सैनिकों की छिव खराब करने जैसे प्रसंग भी सामने आते रहे हैं।

विजय का मानना है कि अभिव्यक्ति की रचनात्मक स्वतंत्रता और यथार्थ की आड़ में नग्नता एवं गाली-गलौज दिखाने का चलन धीरे-धीरे बढ़ा है और ऐसा किसी खास विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए किसी विशेष उद्देश्य के साथ किया जा रहा है। जबिक दुनिया भर में इस बेलगाम माध्यम के नियमन के प्रयास किए गए हैं, किए जा रहे हैं। भारत में भी संसदीय समिति ने ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर दिखाई जानेवाली अश्लीलता पर चिंता प्रकट की थी। समिति के अधिकांश सदस्यों का



Manoj Rajan Tripathi



मानना था कि इनमें दिखाई जानेवाली सामग्री भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है। यह हिंदी और किसी भी भारतीय भाषा में ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के सभी पक्षों पर विश्लेषणात्मक विवरण देती विचारप्रधान पुस्तक है, जिसका लक्ष्य देशवासियों और सरकार को न केवल विज्ञ बल्कि जागरूक बनाना भी है।

विजय का तर्क है कि ओटीटी और यूट्यूब जैसे प्लेटफार्मों ने देश में कंटेंट तैयार करने वालों के लिए भारतीय कहानियों, संस्कृति और परंपरा को दुनिया के विभिन्न कोनों तक ले जाने का एक बड़ा अवसर सबको दिया है। लेकिन रचनात्मकता की आड़ में कई धारावाहिकों में गलतबयानी और भारत विरोधी, समाजविरोधी बयानों के माध्यम से कुछ और ही परोसा जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार किसी स्तर पर इनको देखने और नियमन करने का प्रयास करे ताकि भारतीय कहानियां, संस्कृति और परंपरा विश्व भर में दर्शकों के समक्ष सही पिरप्रेक्ष्य में पहुंचे। उन्होंने कई धारावाहिकों का उदाहरण भी दिया था। इस दौरान विजय ने 'मदर इंडिया' जैसी फिल्म का भी उल्लेख किया और 'पाताल लोक' जैसे धारावाहिकों के उद्धरण के साथ अपनी बात कही। विजय का कहना था कि अगर आप विचारधारा आधारित स्वतंत्रता चाहते हैं, तो आपका एजेंडा छद्म नहीं होना चाहिए।

राजसदन में आयोजित किताब के इस विशेष संवाद सत्र में विजय ने अपनी इस पुस्तक पर तो चर्चा की ही, अयोध्या नगरी की ऐतिहासिकता, भगवान श्री राम, उनके मंदिर के अतिरिा भारतीय समाज और लोक में व्याप्त कहानियों, उपाख्यान और अंतर्दृष्टि से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर अपने विचारों को साझा किया। विजय ने कहा कि हर विषय पर प्रश्न पूछा जाना चाहिए, और स्वस्थ्य समाज के लिए विमर्श



आवश्यक है। उन्होंने कहा कि अगर तथ्यों से छेड़छाड़ होगी तो कोई तो चर्चा करेगा। इस दिशा में उन्होंने गीता प्रेस और गांधी जी की हत्या से संबंधित चर्चाओं पर भी अपना मत रखा।

किताब अयोध्या का आयोजन अहसास वूमेन की सहभागिता और श्री सीमेंट की सीएसआर पहल के तहत हुआ। राज सदन अयोध्या का सहयोग मिला।





PRAVASI RACHNAKAR PURASKAR

नीदरलैंड्स में रहने वाले रामा तक्षक की 'हीर-हम्मो' की मार्मिक कहानी ने जीता दिल

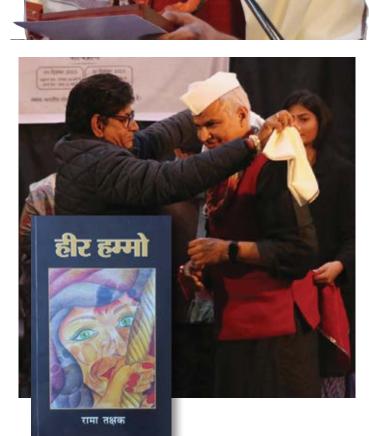
उदयपुर राजस्थान के बहरोड़–अलवर मूल के नीदरलैंड्स में रहने वाले रामा तक्षक को राजस्थान साहित्य अकादमी ने अपना प्रथम प्रभा खेतान प्रवासी रचनाकार पुरस्कार प्रदान किया।

राजस्थान मूल की उल्लेखनीय साहित्यकार प्रभा खेतान की स्मृति को सम्मानित तथा चिर स्थाई करते हुए राजस्थान साहित्य अकादमी ने अपने वार्षिक पुरस्कार शृंखला के तहत यह सालाना पुरस्कार शुरू किया। यह पुरस्कार उन प्रवासी राजस्थानी लेखकों को दिया जाता है जिन्होंने राजस्थानी भाषा और साहित्य में महुतपूर्ण योगदान दिया है। इस साल पहली बार पुरस्कार विज्ञप्ति पश्चात प्राप्त पुस्तकों में से निर्णायकों ने 'हीर हम्मो' कृति का चयन किया। तक्षक ने 'हीर-हम्मो' में महिला की दुर्दशा और संघर्ष को बहुत ही मार्मिक रूप से चित्रित किया। इस उपन्यास की भाषा अत्यांत सरल और सहज है और तक्षक ने कई लोककथाओं और मिथकों का भी उपयोग किया।

इह पुरस्कार राजस्थान साहित्य अकादमी और भारतीय लोक कला मण्डल की ओर से दो दिवसीय पद्मश्री देवीलाल सामर को समर्पित किया गया। पुरस्कार समारोह में राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. दुलराम सहरण, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के पूर्व अध्यक्ष रमेश बोराना, वर्तमान अध्यक्ष बिनका जैश मालू तथा अन्य गणमान्य व्याि और साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

इसी के साथ वर्ष 2023-24 के विजयसिंह पथिक साहित्यिक तथा रचनात्मक पत्रकारिता पुरस्कार से 'कथादेश' के संपादक हरिनारायण, नई दिल्ली के आलमशाह खान, अनुनाद पुरस्कार जयपूर निवासी '*बंद खिड़कियाँ* ,' कृति की अनुवाद एस भाग्यम शर्मा एवं मरुधर मृद्ल युवा पुरस्कार उदयपुर के 'हथेलियों में उगता गुलाब' के कवि दर्पण चांडालिया को भी प्रदान किया। अकादमी द्वारा इन पुरस्कार के तहत 31 हजार रुपये की राशि, प्रतीक चिन्ह, सम्मान पत्र प्रदान किया गया।











The Seven Sisters: Setting the Foundation for New Stories

Prabha Khaitan Foundation is always looking towards the future, and building a vision that encompasses the entirety of our beautiful country. India's northeastern states are an integral part of our cultural, historical and environmental richness, and no progress within the country is possible without foregrounding this magical region. To this end, a new mark on history was made with a significant conference held at the ITC Royal Bengal in Kolkata. Esha Dutta, the Foundation's Honorary Convenor of Northeast Affairs, along with the prospective **Ehsaas** Women from the Northeast, built lasting relationships over delicious meals and engaged in discussions that played a pivotal role in shaping the plan for the future.

The Foundation went on to launch and conduct a successful series of **The Write Circle** in three cities in the Northeast, featuring the author and literary luminary, Preeti Shenoy. And while the Aizawl chapter could not be launched at the same time, owing to some unforeseen, last-minute disturbances in the city, the sessions in Guwahati, Shillong and Dimapur left behind an imprint of warmth and literary camaraderie. Happily, the Aizawl chapter was successfully launched later, and you can read all about it in our next issue! For now, here are a few glimpses of the day-long Kolkata conference, where the Foundation shared its vision for the Northeast with the **Ehsaas** Women, and hosted them for two sumptuous, bonhomie-filled meals!



KOLKATA



SHARING A VISION

Esha Dutta, Anindita Chatterjee (Executive Trustee, **Prabha Khaitan Foundation**) and Manisha Jain (Honorary COO, **Prabha Khaitan Foundation**) gave the **Ehsaas** Women hailing from the northeastern states a comprehensive look at the Foundation's vision — for the Northeast, the country, and the world.



A MEETING OF MINDS

As the conference progressed, the Managing Trustee of **Prabha Khaitan Foundation**, Sundeep Bhutoria, met the **Ehsaas** Women and the Foundation's team, deepening the conversation about cultural and social engagement with the northeastern states.





A DELICIOUS START...

The conference day began with a delectable lunch, in keeping with **Prabha Khaitan Foundation**'s belief that food and dining together are instrumental in building community. At the lunch, the **Ehsaas** Women of the Northeast met the Foundation's team, thus beginning the exchange of ideas.



... AND A SCRUMPTIOUS END!

Everything good must end on a yummy note. To that end, the one-day conference concluded with a wonderful dinner, where **Ehsaas** Women of Kolkata, Gouri Basu and Malika Varma, met their counterparts from the Seven Sisters, and forged strong bonds that shall endure into the future!







Three Cities with a Bestselling Author

One of India's top-selling authors embarked on a tri-city tour with **Prabha Khaitan Foundation** recently. Leading blogger and prolific author Preeti Shenoy joined **The Write Circle** initiative of the Foundation, gracing literary gatherings in Guwahati, Dimapur and Shillong and thrilling book lovers in the northeast with her thoughts on literature, writing and more. Here are snippets from the three sessions.



Dimapur, the Nagaland session of **The Write Circle**, organised by **Prabha Khaitan Foundation**, kicked off with Shenoy expressing her wonder and excitement at

the beauty of the region. "The moment I landed, I started taking videos and sending them to my family," she said. She spoke about the greenery and intricate woodwork at her resort and shared her eagerness to attend the next edition of the Hornbill Festival in the state.

The conversation also moved to Shenoy's *Life Is What You Make It*, a novel that took the author three years to write. Shenoy explained how she stumbled upon artwork

by bipolar children and furthered her research at the National Institute of Mental Health and Neuro Sciences. The book was initially rejected by publishers more than 40 times, but Shenoy persisted and eventually found a

publisher for it. *Life Is What You Make It* has since sold over a million copies. "It is so important to talk about mental health. This is something people talk about more openly now, especially after Covid," she said.

The Write Circle Dimapur was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with hospitality partner Zone Niathu. The session was facilitated by Ehsaas Women of Dimapur

Mental health
is something
people talk about
more openly now,
especially after
Covid

ゟゟゟ







The only things

constant in my life

were my family and

books. Wherever

we would shift, our

books would move

with us

With Simalisha Baruah, **Ehsaas** Woman of Guwahati, steering the conversation, Shenoy plunged back into her childhood, to her first realisation of wanting to be a writer. It all started with her love for books and reading, which she enjoyed even as a child.

Shenoy's family was constantly on the move because her father had a transferrable job. "The only constants in my life were my family and books. Wherever we would shift, our books would go with us, and my father would take a membership in a local

library," she said. Shenoy wrote her first book when she was five. It was six pages long. And her childhood knack for writing followed her into adulthood, leading to novels

like her latest one, All the Love You Deserve.

Baruah asked the author which character in the book she had enjoyed writing the most. Shenoy named Sujit, the troublemaker and junkie. "I gave Sujit a voice. He is a bad boy, and I feel society side-lines those who are not achievers," she said. The book tells Sujit's side of the story so that readers can understand and empathise with him better.

The Write Circle Guwahati was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with hospitality partner Vivanta. The session was facilitated by Ehsaas Women of Guwahati



Esha Dutta and Tanushree Dutta Gogo











Preeti Shenoy and Jyoti Agarwal, Ehsaas
Woman of Shillong, chatted about myriad
subjects at the Meghalaya session of The
Write Circle organised by Prabha Khaitan
Foundation. On the agenda: the author's
creative process while writing a novel, which
is significant considering that 16 of Shenoy's
books have been bestsellers. Shenoy revealed

that what she needed most was time alone and that she was something of an introvert. "When I say 'introvert', I don't mean shy. I just need to recharge on my own," she explained, before adding, "I write all my books in my room. I can't write at a café." She made special mention of her pet Doberman, who has sat by her side for at least 12 of her books.

Fans of Shenoy know her to be a talented amateur artist as well. Touching upon Shenoy's interest in painting, Agarwal queried if art inspired her books or if it was the other way around. Shenoy responded there was no connection between the two. Writing meant developing characters, creating a plot and doing the work. "Painting I do for joy. I carry my sketchbook with me and paint on

I write all my books in my room. I can't write at a café

2)2)

the spot," she said.

The conversation also explored Shenoy's take on relationships. "No matter how you paint it, I think relationships are great," the author said. She also took note of complicated relationships, saying, "I wrote a book called *The One You Cannot Have* and its tagline was that whether you are married,

single, committed or divorced, there will always be that one person you can't have."

Later, when a member of the audience asked how important it was for a writer to be a reader, Shenoy replied that it was very important. "To write well you must read. Read as much as you can and read varied books," she said. The author added that she had read and reviewed over 400 books and that she could easily spot someone who wrote without reading.

The Write Circle Shillong was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with hospitality partner Vivanta. The session was facilitated by Ehsaas Women of Shillong





FROM THE HEART



I wanted to take a moment to express my deepest gratitude to the entire team of Prabha Khaitan Foundation for orchestrating the incredible The Write Circle events during my tour of the Northeast. What an unforgettable experience it was! Be it Guwahati, Shillong or Dimapur, each city had its own charm, and the warmth I received was beyond expectations. The effort and dedication put in by the Ehsaas women and the Foundation were nothing short of stupendous. I want to express my heartfelt appreciation to everyone involved, especially to Simalisha Baruah, Jyoti Agarwal and Abokali Jimomi, who were in conversation with me.

The events were not just about books; they were about creating a circle of connection, sharing stories, and celebrating the love for literature. The interaction with the audience was fantastic, and I cherished every minute of it. It's evident that a lot of hard work and passion went into making these events a success.

I feel incredibly grateful for the opportunity to be a part of this journey, even though the travel did get a bit exhausting at times! However, every moment of tiredness was outweighed by the joy of meeting enthusiastic readers and being a part of such a vibrant literary community. It's people and organisations like the Foundation that make these experiences not just memorable but truly special. I do feel very blessed that I have actually managed to make friends with so many wonderful people on this trip, which is something I rarely experience even though I do a lot of book events. The vibe and warmth exuded by everyone involved made it possible! I look forward to crossing paths again in the future.







Writing is second nature to Preeti Shenoy. The author has enthralled readers across the country

for over a decade, writing 15 books in 14 years while raising her two children. Several of her novels, including Life Is What You Make It, The Secret Wish List, A Hundred Little Flames and The One You Cannot Have, are bestsellers. At a recent session of An Author's Afternoon organised by Prabha Khaitan

Swati Gautam

Foundation, while in conversation with Swati Gautam, the Founder and CEO of Necessity, Shenoy spoke of her journey as a writer, the themes of her books, the trend of self-publishing and more. Arnab Chatterjee, the Regional Manager of Taj Bengal, Kolkata, delivered the welcome note.

Strangely enough, Shenoy had never envisioned writing as a profession. It was more of a comfort and refuge, a way to record her joys and pains. From crafting short stories in childhood to chronicling the intricacies of motherhood, writing became more than just a pastime; it became a haven. But few passions turn into professions without a push, and for Shenoy, the death of her father provided that push. The profound loss of a parent led Shenoy to use blogging as a cathartic outlet. This marked the start of her writing journey professionally.

However, the foray into books did not happen right away. As she gained prominence as a blogger, Shenoy's knack for storytelling opened doors to collaborations with various publications. Almost two years after her initial steps into the world of writing, she took a leap in 2008 by publishing her debut book, *34 Bubblegums and Candies*, a non-fictional compilation of daily happenings and some of her blog posts. Shenoy's journey was fuelled by the sheer joy that writing brought her and the realisation of its transformative power. "Writing is

Writing can change

people's lives for

the better. When I

get messages from

readers that my

writing has given

them hope, it means

the world to me









powerful because it can change people's lives for the better. When I get messages from readers that my writing has given them hope or saved their lives, it means the world to me," said Shenov.

Although romance is one of the predominant themes in her books, she does not see herself as a romance writer. "My books are not just romance. There's so much more to them. They represent a slice of life and, in each

of my books, I tackle a different theme. I like writing about things that I feel strongly about but can do nothing about at the moment," noted the author. As a case in point, her latest book, All The Love You Deserve, delves into the intricate nuances of navigating life in a post-pandemic world.

While exploring the theme of contemporary love, Shenoy underscored how relationships have evolved. Acknowledging the newfound freedom and choices available to today's youth, she emphasised the crucial role of values in

guiding relationships. Shenoy suggested that making the right choices in love and life is pivotal for finding stability amidst the chaos. At the same time, she agreed that love is subjective, stating, "What I consider as love, you may not, and that's fine. However, you need to give love a chance." In Shenoy's view, understanding love calls for deciphering someone else's love language—a process that demands time and often becomes the ultimate litmus test for lasting relationships.

Shenoy is also a talented illustrator. When asked if she envisioned a book of her illustrations being published anytime soon, Shenoy said she would discuss the possibility and feasibility with her publisher first. "I am very practical that way. A book of illustrations might not do as well as my other books and it might not make enough money. Why should I waste my time on it? If I love illustrations, I can paint something and put it on my

Instagram page for people to see," she said.

Towards the close of the conversation, Shenoy shifted her focus to the growing trend of self-publishing. While recognising everyone's right to write, Shenoy emphasised that reading is a valuable use of time as well. She encouraged readers to pick up books that genuinely resonate with them, rather than read just for the sake of it. "I believe that the quality of an author's work is more important than the title of being an author. One should not believe that they can become an author overnight,"

she added.

The event concluded with a lively Q&A session with the audience. Esha Dutta, Eshaas Woman of Kolkata, delivered the vote of thanks on behalf of the Foundation while Jeetu Rampuria felicitated Gautam and Shenoy.

An Author's Afternoon was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with hospitality partner Taj Bengal and digital media partner The Telegraph Online — My Kolkata. The session was facilitated by Ehsaas Women of Kolkata







chooses you

The historic and beautifully restored David Hall in Kochi served as the venue for a recent chapter of **The** Write Circle organised by Prabha Khaitan Foundation. The session featured columnist, novelist and TEDx speaker Kiran Manral, whose writing has appeared in leading publications like The Asian Age, The Times of India and Cosmopolitan. A multifaceted media professional, Manral is well known for her ability to spot trends, share cultural insights, carry out qualitative research and bring an entrepreneurial spirit to all she does.

Nazia Yusuf Izuddin, Ehsaas Woman of Kochi, welcomed Manral to the stage, along with the conversationalist for the day, Ehsaas Woman of Amritsar, Preeti Gill. As the talk commenced, Manral spoke with Gill about her book All Those Who Wander, her choice of themes and more.

Gill asked the author why she chose to I don't know if you write a book like *All Those Who Wander* choose to do a book and Manral responded, "I don't know if you choose to do a book or not, but the or not, but the book book chooses you." She explained that when people think about their lives, they often ponder what might have happened had they chosen a different road and made different choices. "The book examines this from the views of a young girl and of an old woman who warns

Dominic Michael





the girl about a decision," she says. The twist is that the old woman must search for the girl across different dimensions to find and warn her.

> While the book covers domestic abuse, murder and other dark themes, human relationships are at the heart of it all. Gill inquired how Manral was drawn to such themes and the author replied that she was pulled to them at different stages of life. "I wrote romance and chick-lit for the heck of it but found myself being drawn to much

darker subjects," she said. Although Manral loves the Wodehouse side to her lighter books, she admitted that a Stephen King was in her, just waiting to emerge.

From there the conversation moved on to other subjects, ranging from the need for gender parity to her research process. As the talk came to an end, the audience had a chance to put their questions to Manral, following which the author was felicitated by Dominic Michael, the Managing Director of CGH Earth Hotel.

The Write Circle Kochi was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative and in association with hospitality partner David Hall. The session was facilitated by **Ehsaas** Women of Kochi





As part of its commitment to spreading the love for literature across India, **Prabha Khaitan Foundation** recently brought **The Write Circle** to Mussoorie, the "Queen of the Hills". Gracing this new chapter at the scenic hill station was writer, editor, National Awardwinning voiceover artiste and disability advocate Shobha Tharoor Srinivasan. Isha Gupta Vaish, **Ehsaas** Woman of Mussoorie, welcomed the author and flagged off the session.

Srinivasan chatted freely with Pooja Poddar Marwah, **Ehsaas** Woman of Dehradun. "I had a lovely morning exploring the hills," she said, before setting off on a walk down memory lane. "I was a beloved of my mother because my nature was very different from that of my siblings. My brother [Shashi Tharoor] is well-known enough — a super-achiever, very capable. As a child, it gets easier if the parent's ambitions are fulfilled by the older child. Then the younger one can grow up without any pressure," Srinivasan said.

She has always been in awe of her mother, who galvanised the three children to achieve their potential. "It doesn't matter where you're born. We're all extraordinary in different ways," she said, emphasising the need to be curious about life and cultivating an interest to know more. That curiosity has seeped into her writing, especially her books for children, some of which have found their way into school curricula.

With Marwah steering the conversation, an interesting anecdote popped up. Turns out Srinivasan was the first Amul baby, selected from among 700 other infants by Shyam Benegal himself. "It's all about being in the right place at the right time," Srinivasan laughed. Many years later, when Benegal travelled to California on a film project, Srinivasan's mother instructed her to go and say "Hi". Srinivasan queued up obediently, awaiting her turn to meet Benegal, and the filmmaker was delighted to see her again.

The session also touched upon her convent education and the experience of being a teenager. Eventually, it wound up with an engaging Q&A session, during which the audience asked some interesting questions that

Srinivasan answered in her inimitable style.

Pooja Poddar Marwal

It's all about being in the right place at the right time

 \mathfrak{II}

The Write Circle Mussoorie was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with hospitality partner Hotel Hill Queen and digital media partner Dainik Jagran. The session was facilitated by Ehsaas Women of Mussoorie











Making Every Bite Count

How do you unlock the power of your plate? In two episodes of **The Write Circle**, organised by **Prabha Khaitan Foundation** in Bhubaneswar and Delhi, Abhilasha Sethia and Vidhi Beri, the co-authors of *A Superfood a Day*, offered some answers.



Bhubaneswar

A fter a warm welcome by Vedula Ramalakshmi, Ehsaas Woman of Bhubaneswar, conversationalist Nidhi Garg, another Ehsaas Woman of Bhubaneswar, began the session with Sethia and Beri. When Garg asked about their inspiration for the book, Sethia explained it began with her thinking about a meaningful birthday gift for her grandson. "I thought of developing a cookbook for him that he'll enjoy even when he grows up," she said. To appeal to a young audience, their book has QR codes that can be scanned to watch cooking videos.

The conversation covered good and bad food choices as well. For example, Beri observed that nuts are a great choice for children to eat in the morning, as they are easier to digest than milk. She also addressed the widespread problem of lactose intolerance, explaining that while people drank fresh milk earlier, "today milk comes out of a packet and is possibly pumped with hormones."

The session also touched upon the health problems associated with cola and the benefits of dry fruit and curd. A Q&A rounded things off, with Sethia and Beri fielding questions from the audience about salt, diets and more, bringing this invigorating session to a satisfying end.

The Write Circle Bhubaneswar was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with hospitality partner Mayfair Hotels & Resorts. The session was facilitated by Ehsaas Women of Bhubaneswar









Delhi

In this chapter of **The Write Circle**, Neelima Dalmia Adhar, **Ehsaas** Woman and the Foundation's Honorary Convenor of Delhi-NCR Affairs, chatted with Sethia and Beri about food and its impact on health. Among the common concerns to be discussed was the use of *ghee*. "When my son was growing up, there was a lot of stress on not using *ghee* or oils," she said, adding that *ghee*, a key ingredient in Indian cooking, is actually good for you.

When the conversation turned to the age-old conflict of what's tasty isn't always healthy, Beri suggested using the 80/20 rule. "Healthy food has to be 80 per cent of your diet so you get all the nutrients," she said, adding that less

healthy options like street food or junk food could make up the remaining 20 per cent.

The conversation extended to food habits, fad diets and even Maggi, before the final vote of thanks by Dipali Bhasin, **Ehsaas** Woman of Delhi, and with Richa Yadav felicitating the authors.

The Write Circle Delhi was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with the India International Centre, Dinesh Nandini Ramkrishna Dalmia Foundation and media partner Dainik Jagran. The session was facilitated by Ehsaas Women of Delhi











Best known for her long stint as the former editor of *Femina* magazine, Sathya Saran has many laurels to her name. She has authored critically acclaimed biographies of Hariprasad Chaurasia and Guru Dutt, is a consulting editor and teaches fashion journalism at NIFT Mumbai. Saran graced a recent chapter of **The Write Circle** at Hotel Radisson Blu in Nagpur, with Monica Bhagwagar, **Ehsaas** Woman of Nagpur, welcoming the author to the stage and opening the session.

Chatting with **Ehsaas** Woman of Nagpur, Parveen Tuli, Saran revealed that her writing journey began because she found her Hindi lessons boring and started writing a crime thriller instead. Eventually, the writing bug took her to Nagpur University, where she studied English literature and journalism. The degree would come in handy during her 26 years with *Femina*, and especially her 12 years as the magazine's Chief Editor.

"Femina was a great learning experience. I had a good editor who was open to teaching people," she said. However, wearing the Chief Editor's hat did not come easy, and Saran remembers it as a "trying time". The magazine was on the brink of closure, but with the support of the publisher, Saran accepted the challenge. Together, they ran a survey to determine why Femina was not selling and ads were not coming in. Circulation was down to just 63,000, and the magazine had developed a reputation of being a preachy mom's magazine. Things

started turning around when Saran took over, and slowly circulation went up to 1.63 lakh!

Saran discussed her approach to feminism as well, which meant standing up for women's rights, but more than that, exploring one's true potential. "Changing

perceptions — that was the brand of feminism that I preferred," she said.

She also regaled the audience with anecdotes about the award-winning flautist Hariprasad Chaurasia. The story goes that Chaurasia had been seeking music lessons from the famously reclusive Annapurna Devi, the classical Indian *surbahar*



player. After three years of persuading, Devi finally agreed. Besides, Chaurasia himself was a difficult man to pin down. When Saran started writing his biography, she initially found it impossible to locate him because he was always on the move.

As the discussion came to a close, the audience joined in with questions of their own, which resulted in an animated and engaging Q&A session with the author.

The Write Circle Nagpur was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative. The session was facilitated by Ehsaas Women of Nagpur











One day, listening to

the people who read

the land will become

more important than

listening to the people

who read the book

Environmental photographer, artist, writer, *National Geographic* explorer Arati Kumar-Rao wears many hats with elan! In a riveting session of **The Write Circle** at the ITC Rajputana in Jaipur, **Prabha Khaitan Foundation** hosted an engaging conversation

between Kumar-Rao and intersectional environmentalist and filmmaker Aastha Johri. Mita Kapur, **Ehsaas** Woman of Jaipur, introduced Kumar-Rao, who is well-known for holistically documenting environmental degradation across the Indian subcontinent, and Johri, a visual storyteller and environmental advocate.

Kumar-Rao's new book, *Marginlands*, was the highlight of the Jaipur session. The work of environmental non-fiction took a

decade to write, and it explores India's most endangered landscapes, paying homage to the resilient inhabitants of those "marginlands", people who accept every challenge to protect where they live and work. Kumar-Rao explained that the book was developed for general readers, bureaucrats in power and as a personal journey. "One day, listening to the people who read the land will become more important than listening to the people who read the book," she said.

As the conversation shifted to Kumar-Rao's formative years in Mumbai, the author revealed it was her father, a devoted environmentalist, who ignited her passion for storytelling and instilled in her the values she holds close even today. Once, while recovering from a bout of typhoid, Kumar-Rao remembered busying herself in writing stories. She acknowledged the unwavering support of her parents, who encouraged her to pursue her passions freely.

When Johri drew the audience's attention to the poetic descriptions in *Marginlands*, underlining how nature influences her writing, Kumar-Rao emphasised that living in harmony with the land is essential. She urged everyone present to re-think their relationship with

the environment and offered a word of warning, "Before the actual crisis comes the crisis of imagination."

Finally, it was time for a Q&A with the audience, during which Kumar-Rao shed light on the detrimental effects of air pollution on gut and brain health, and the stunting of growth in childhood. Deependra Rana, the General Manager of ITC Rajputana, felicitated Kumar-Rao and Johri, and the session ended with a

standing ovation from the audience.

The Write Circle Jaipur was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with Siyahi and Spagia Foundation. The session was facilitated by Ehsaas Women of Jaipur











The picturesque city of Thimphu became the stage for the inaugural session of **The Write Circle** in Bhutan. Hosted by **Prabha Khaitan Foundation** at the dusitD2 Yarkay Thimphu, the literary initiative's Bhutan debut featured Nilanjana S. Roy, the celebrated novelist, editor and *Financial Times* columnist, as the keynote author.

With poet and academic Sonam Pem Tshoki steering the conversation, Roy shared her insightful journey through the corridors of literature. Together, Roy and Tshoki explored Roy's creative process while infusing the air with laughter and thought-provoking discussions. Through this tête-à-tête, the duo unpacked the essence of Roy's 2023 novel, *Black River*. They also delved into the art of reading and writing, leaving the audience

The session began with Tshoki asking the author which character from her book *Black River* she would invite to go on a walk with her. Roy replied that she would love to take a walk with the maverick man who loved rivers. "He's a little detached from reality and his name is Khalid. He has a gentle soul, and he talks to birds and ants. I would love to take him for a walk on the outskirts

with a deeper understanding of the author's

craftsmanship.

of Thimphu up to the Buddha point," she said. Roy went on to add that while *Black River* was a story about crime, it was also about landscapes and how they change.

The conversation then moved into Roy's other books, as well as her approach to feminism and gender quality. Asked about her inspiration for the novel *The Girl Who Ate Books*, Roy said, "My relationship with books was famously tactile. But that was when they were published on much better paper and the paper smelt like ice cream and tasted like cookies." When Roy liked a story, she ate it. "I don't do that anymore, but that is when I sed I was going to be a book lover for life," the

realised I was going to be a book lover for life," the author added.

The session in scenic Thimphu wrapped up with Roy reading a snippet from *Black River*, followed by a Q&A round during which the author responded to questions from the audience. Urvi Bhuwania of Siyahi presented the closing address and then all the attendees proceeded for high tea.

The Write Circle Thimphu was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with Bhutan Echoes, Siyahi and hospitality partner dusitD2 Yarkay Thimphu

My relationship with books was famously tactile.
But that was when the paper smelt like ice cream and tasted like cookies

Urvi Bhuwania





















Dancing to the Beat of the Damaru

Nilava Sen and Shyam Dattani perform Damaru

As winter slowly set in last year, the Tollygunge Club Hall

resonated with the captivating beats of the *damaru*, a traditional percussion instrument that holds profound religious and cultural significance. Commissioned by Serendipity Arts Foundation and Sampad Arts UK, the Tanuree Shankar Dance Company presented *Damaru*, a unique dance performance spearheaded by a talented team of artists, exploring the symbolic depth of the instrument and weaving together spirituality, tradition, and modern artistic expression. In attendance for the scintillating show were several eminent personalities, including Andrew Fleming, the British Deputy High Commissioner to East and North East India.

At the heart of this mesmerising collaboration was Shyam Dattani, a London-based Kathak dancer and performance maker known for challenging gender roles within Kathak.

Trained under Urja Desai Thakore at Pagrav Dance Company, Dattani has been a BBC Young Dancer 2017 grand finalist, bringing a wealth of experience and innovation to the project.

Joining him was Nilava Sen, a devoted practitioner of the Uday Shankar technique of dance and Bharatanatyam. Under the guidance of Tanusree Shankar and Rama Vaidyanathan, Sen has graced prestigious stages across India and abroad, earning accolades such as the Nalanda Nritya Nipuna Award 2020 from the Nalanda Dance Research Centre.

The contemporary-classical duo, Shadow and Light, composed of Anindo Bose and Pavithra Chari,

added a modern touch to the performance. With three critically acclaimed studio albums and notable collaborations, including a Grammynominated song with the Berklee Indian Ensemble, their musical prowess elevated the fusion of tradition and modernity.

Gyandev Singh, a lighting designer and National School of Drama graduate, contributed his expertise to enhance the visual aesthetics of the performance. Commissioned by Sampad and Serendipity Arts, this groundbreaking production premiered at the Serendipity Arts Festival 2023. Following its debut, the team aims to take this rhythmic journey to various Indian cities, culminating in a UK tour in 2024. As the *damaru* resonates, the performance

promises to unlock new dimensions of artistic expression, seamlessly blending tradition and modernity in a harmonious celebration of music and culture.



Andrew Fleming

V. Ganapathy







Unravelling the Expression of Migrant Identity



Israeli writer Tomer Gardi is the acclaimed author of novels like *Broken German*, *Or Your Money Back*, and the award-winning *And Nothing Ever Ends*, which bagged the Leipzig Book Fair Prize in 2022. At the second session of **The Universe Writes**, hosted by **Prabha Khaitan Foundation** in Jaipur's ITC Rajputana, Gardi was joined by Vaidehi Singh, the Founder and Principal of Maharaja Sawai Bhawani Singh School. Mita Kapur, **Ehsaas** Woman of Jaipur, welcomed the guests and flagged off the session.

The talk began with Gardi discussing his debut novel, *Broken German*, and the decisions that informed his choice of language — a unique lingo embracing the errors of grammar and diction in acknowledgement of the language spoken by migrants in Berlin. "When my novel was being assessed by the jury, there was a fierce discussion: 'Is this at all worthy of being called literature? It disregards grammar and has been written with mistakes," said Gardi. He added that the narrative wasn't a conscious recollection of the Holocaust and Nazism, but rather an exploration of the migrant's language experience.

When Singh enquired about the autobiographical elements in the novel, Gardi admitted to modelling the

narrator on himself. "One of the biggest dangers of a novel which has a narrator is that of becoming pedagogical, as if they are trying to teach people the truth. In my novel, I have tried to provide an outsider's view of what it's like for a migrant living in Berlin," he said. Continuing with the theme of migrant identity, Gardi's next work, *Stone Paper*, delved into identity erasure and loss of cultural memory. He also offered the audience a sneak peek into





his current project, *A Passage to India*, which explores the capitalist system of food delivery across five countries by connecting diverse narratives of food, traditions and hierarchies in a globalised world.

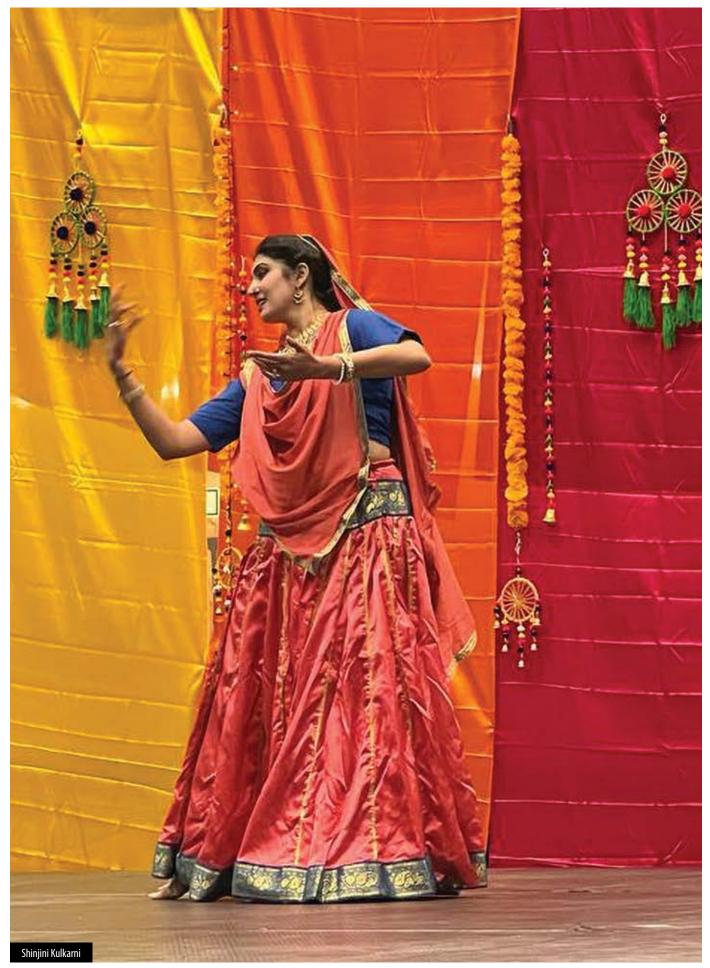
The conversation was followed by a captivating Q&A session with the audience, which spurred questions about the Israel-Palestine conflict and its political implications. Gardi spoke of his hope for a political resolution that would promote peace and harmony. The session concluded with Deependra Rana, the General Manager of ITC Rajputana, extending his appreciation to Gardi and Singh.

The Universe Writes Jaipur was organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative in association with hospitality partner ITC Rajputana, Siyahi and Spagia Foundation. The session was facilitated by Ehsaas Women of Jaipur









Manoj Misra





Kathak Brilliance Ignites Ignites Cultural Splendour At Oslo's Diwali Extravaganza



For over three decades, the Vishwa Hindu Parishad Norway (VHPN) has been an integral part of Oslo's

cultural fabric, commemorating Diwali with fervour and enthusiasm. This year's rendition of the VHPN's Diwali cultural evening, organised with **Prabha Khaitan Foundation** under its **Sur Aur Saaz** initiative, aimed to transcend boundaries, uniting individuals from diverse backgrounds in a spirit of celebration and togetherness. The VHPN endeavoured to create an inclusive and vibrant atmosphere, embracing the manifold hues within their community.

The evening commenced with a *diya* lighting ceremony, after which the esteemed presence of Norway's youngest member of parliament, Himanshu Gulati, and Acquino Vimal, the new Indian ambassador to Norway, made an appearance. An exquisite array of traditional dance performances, spanning classical and folk genres, were staged, bringing different cultures together.

The pinnacle of the evening unfolded with a Kathak performance by Shinjini Kulkarni, granddaughter of the revered Birju Maharaj and **Ehsaas** Woman of Delhi. She performed while radiating grace and artistry, which brought out the authenticity of the classical Indian dance. The mastery displayed in Kulkarni's command over rhythm, particularly the intricate footwork known as *tatkars*, reverberated throughout the auditorium. The seamless synchronisation between her footwork and the accompanying music created a mesmerising symphony, resonating with the rich heritage and cultural depth embodied within Kathak.

Expressions of gratitude were extended to the Foundation for its collaborative efforts in orchestrating

this triumphant Diwali programme. Additionally, appreciation was conveyed to Kulkarni for her exquisite

performance. With over 700 attendees, the evening full of Kathak and lights encapsulated a cultural tapestry of heritage and artistic finesse. It was an unforgettable evening that celebrated Diwali's spirit of unity and cultural richness. This year's Diwali event by the VHPN stood as a testament to the beauty of diversity and community solidarity in the heart of Oslo, fostering lasting memories for years to come.

Sur aur Saaz Oslo was presented in association with VHP Norway









Reimagining the **Threads of Fashion**



We came from

receiving biased

judgements for being

heterosexual men

who liked making

clothing and jewellery.

The Indian fashion

scene has changed

considerably in the

last two decades



he first ever physical session of **Tête-à-Tea**, organised by Prabha Khaitan Foundation along with the noted screenwriter, novelist and columnist, Advaita Kala, was held at The Connaught in New Delhi. The session featured two luminaries in their respective fields - Kala herself, and Nikhil Mehra, from the globally recognised Indian couture label, Shantanu and Nikhil (S&N). The brand is chiefly recognised for restructuring the idea of luxury male clothing, and for its chic and elegant clothing style that is enjoyed by a wide range of celebrity clientele. Among her many talents, Kala also excels as a conversationalist, and is known for writing the screenplays of films like *Anjaana Anjaani* and *Kahaani*. The formal welcome address was given by Vinti Kathuria, Ehsaas Woman of Agra, after which the conversation began.

The dialogue on Indian aesthetics began with an intimate recollection of Kala and Mehra's bond, which go back to their days of schooling. After studying design in LA, Mehra returned to India and established a fashion label in 1999 with his brother that primarily catered to men's clothing. Kala commented, at this juncture, on how the duo of brothers took the fashion world by storm: in a country where men weren't supposed to

Vinti Kathuria and Ruhia Walia Sya

be "fashionable" or care about how they look, what S&N did was pioneering. They did not just make clothes, they broke through a very patriarchal mindset. "I was very surprised to see men would only go to Fabindia or get clothes made by local tailors," said Mehra. "And every time such a purchase happened, they were accompanied by a female member of the house, who would decide for them what to wear. This is the same man who is making big decisions at work. But the moment he steps back into his home, his feminine side is gone, and he is entirely dependent upon female energy. We thought this was a good market to explore and experiment with."

When asked about his signature draping style in men's kurtas, Mehra told the audience about its origin. The drape was born from his home, inspired by the

vivacity of his mother. He decided to put the 'Shakti' on the 'Shiva' – that is, to put a bit of styling that was essentially feminine on the man's kurta, in order to make the combination bloom! Mehra, who considers Rekha to be the epitome of style, also recollected, with satisfaction, his journey in the fashion industry over the last two decades. Starting off with an idea that had never been thought of before, today S&N is worn alongside the likes of Stella McCartney and Louis Vuitton at international fashion galas.

The conversation ended with a few light-hearted questions asked by Kala

and the audience. Replying to an audience question, Mehra said that he likes to incorporate the army clothing style into his brand, as he is enchanted with the idea of a uniform. The session came to an end with Ruhi Walia Syal, Ehsaas Woman of Jalandhar, delivering the official

vote of thanks, and Kathuria felicitating the guests. **Tête-à-Tea** Delhi was presented by Shree Cement Ltd as their CSR initiative, in association with Kahalli and The Connaught IHCL SELEQTIONS as hospitality partner. The session was facilitated by Ehsaas Women of Delhi







It's All About Bridging the Gap

As we, as a society move forward, the chasm between the privileged and the underprivileged widens every second. For every affluent individual, swiping their platinum credit card at a Michelin-star restaurant, there are many more people homeless and hungry. But the season of giving allows us the opportunity to lessen that gap, even if it is by a tiny margin. Eradicating poverty will take a long while, but, in the meantime, we can try to ease the suffering of others as much as possible.

Muskaan, a joint initiative of Prabha Khaitan Foundation and Education For All Trust, put together a special event dedicated to spreading joy and making a difference in the lives of the differently-abled children from Prayas and underprivileged kids. A one-of-a-kind experience was curated for all the children present. Gifts were exchanged, and engaging performances by local artists brought a smile to the faces of all.

Muskaan strives to make life easier for the less fortunate, even more so during the festive season. This event succeeded in spreading joy, fostering a sense of community, and reminding everyone involved of the power of giving.

Muskaan, a joint initiative with Education For All Trust, is organised with the support of Shree Cement Ltd as their CSR initiative









Emperors, Pigs and the Gingerbread Man

Muskaan, an initiative of Prabha Khaitan Foundation and Education For All Trust, spread joy and laughter among the children at three respected institutions – Shishu Bhavan, run by the Missionaries of Charity in Kolkata, the Suncity School in Gurgaon, and the Sadhu Vaswani International School for Girls in New Delhi. The engaging tales of the Gingerbread Man and other beloved characters was shared by the renowned puppeteer, Shreedevi Sunil, with the eager audience. The children lapped it all up, which is why the Gingerbread Man finally got caught, if we could say so!

Shishu Bhavan, Kolkata

At Shishu Bhavan, Shreedevi Sunil's storytelling brought to life the famous story via puppetry, much to the delight of the audience. Christmas carol singing followed, spreading joy and cheer during the festive season. The dulcet voices of the merry children filled the air. They were given cakes, blankets, toys and other goodies, much to their delight, creating a touching experience for both the **Muskaan** team and the residents of Shishu Bhavan. As peals of laughter and mellifluous carols floated through the air, the spirit of Christmas was strong. Thus concluded an event befitting the very spirit of Christmas.











Suncity School. Gurgaon

Another puppetry session with Shreedevi Sunil was organised by Muskaan at the Suncity School in Gurgaon. Bhawna Singh graciously introduced the puppeteer to an eager audience. Sunil demonstrated just how skilful she is, bringing three stories - 'Three Little Pigs', 'The Gingerbread Man' and the story of 'Christmas Tree' - to life, much to the delight of the eager students. After the event, Singh delivered the vote of thanks.



Sadhu Vaswani International School for Girls, New Delhi

At the Sadhu Vaswani International School for Girls, the stage was set for Shreedevi Sunil again, to tell the tale of 'The Gingerbread Man' and 'The Emperor's New Clothes'. She coupled her puppets with her storytelling skills, voice modulation, hand gestures and a captivating tone, thus leaving a lasting impression. According to Sujata Barua, a teacher at the school, the experience "made education a delightful journey for our students". The show blended traditional puppetry with modern techniques, thus creating a fun learning environment. The students loved the show, which wasn't only a stellar example of puppetry, but also an example of the power of interactive and immersive learning experiences.

After the workshop, the headmistress, Deepti Sharma, delivered a touching vote of thanks. Muskaan's mission to make learning a holistic experience left a lasting impact on the participating students but also paved the way for future explorations in the realm of creative and interactive learning.







Spreading the Joy of Giving **Through Art**

It was the most wonderful time of the year, and Prabha Khaitan Foundation, under its **Muskaan** initiative, organised *Christmas Wonderland* – an online art competition open to children aged between six and 10 years, so they could put on display their imagination and artistic skills. Through the competition, participants were encouraged to create artwork that they thought was a suitable embodiment of a Christmas Wonderland. For this, they were allowed to create drawings, illustrations or craftwork using household materials.

The competition was received well, as entries poured in from every corner of the country. The enthused children creatively displayed their artistic flair, leaving the judges spellbound. Thus, choosing the winners was a heartbreaking but delightful experience. After careful consideration, Muskaan was proud to announce the 10 winners of the art competition, who successfully captured the essence of a magical Christmas and demonstrated exceptional artistic flair and imagination. They all won prizes.

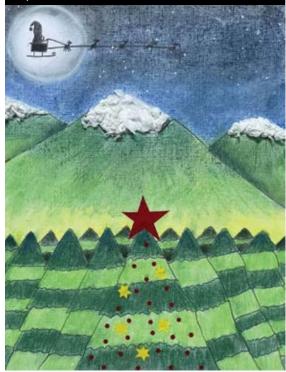
The response to the competition was nothing short of extraordinary. The enthusiasm and creativity displayed by the young artists were delightful to witness, making the task of selecting winners a challenging endeavour. It is hoped that these children will continue to tap into their inner reservoirs of creativity in the times to come. Let's have a look at the artwork created by the winners!







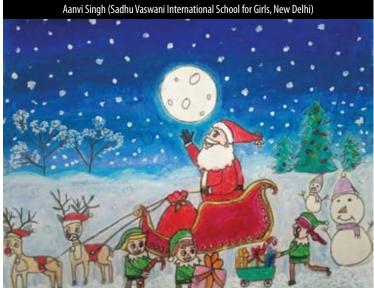






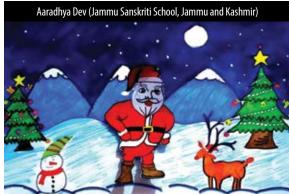


















A Film to Remember

Cinema and theatre are two powerful visual art forms that are intricately woven into our societal fabric. They are both fed by creativity, without which neither could exist. **Prabha Khaitan Foundation** recognises the profound impact of these forms of media, and celebrates this creative art via **Chalchitra Rangmanch**, a unique initiative for cinema aficionados.

The glitterati of the city of Kolkata converged one memorable evening for a special screening of Aniruddha Roy Chowdhury's *Kadak Singh*, a Hindi thriller starring the inimitable Pankaj Tripathi, Sanjana Sanghi, Jaya Ahsan and Parvathy Thiruvothu. With the vibe set for a stellar evening, people met, discussed the movie, and had a wonderful time. Apart from the director, producer and cast of the film, the screening also witnessed the presence of stalwarts of the film, music and entertainment industries, including Dhritiman Chatterjee, Roopa Ganguly, Arindam Sil, Shantanu Moitra and Dev, among others. Transcending entertainment, this cinematic soiree left an indelible mark while celebrating both artistic excellence and meaningful connections. Here are a few glimpses from the evening!







































Food Fit for the Gods

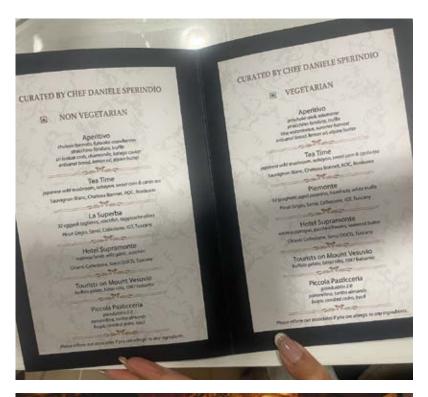
Lovers of exemplary food in Kolkata recently got an Italian treat, as the Michelin star-winning chef, Daniel Sperindio, served up a gastronomical delight at the Chambers in Taj Bengal. The event, hosted in association with **Prabha Khaitan Foundation** and facilitated by Somanna Muthanna and Diganta Chakraborty of The Soul Company, saw Chef Daniele present his creations in India for the first time. Having been trained by Michelin star-awarded chefs such as Gianni Malagoli in Genova, Grant Achatz in Chicago and Yoshihiro Narisawa in Tokyo, the Italian-born Daniel is now on a journey to celebrate his heritage. At the Chambers, he served up an immersive, six-course meal comprising dishes from his menu at the Art di Daniele Sperindio, his new space in Marina Bay, Singapore.

The non-vegetarian aperitivo included bites such as Chutoro Tonnato Fukuoka Strawberries (key ingredients included Japanese king strawberries in a Tonnato sauce made using tuna, anchovies and mayonnaise). The Stracchino Fonduta with Truffle was another bite-sized snack made with Italian cow's milk cheese, typical of Lombardy, Piedmont, Veneto and Liguria. Another unforgettable bite was the Sri Lankan crab served with chamomile and some Kaluga caviar (a sustainable alternative to the endangered Beluga variant). The soup course had Japanese wild mushroom, sweet corn and sabayon (a light custard-style liquid made using egg yolk, sugar, and a sweet wine), all coming together with some Cardo tea. The meal concluded with a selection of sweet treats such as Gianduiotto 2.0, Panarellina Cake that's baked in a cold oven, Toritto Almonds Bugie (sweet carnival fritters) and some fragrant Candied Cedro.

The delectable evening was made even more memorable as eminent personalities from the city mingled and chatted as they got a taste of Italy in Kolkata. Here are some glimpses of the menu offerings and the guests from the evening!

















































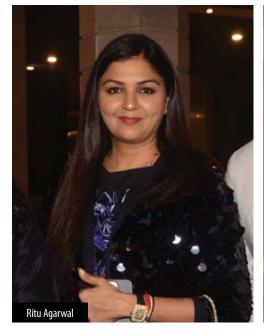
























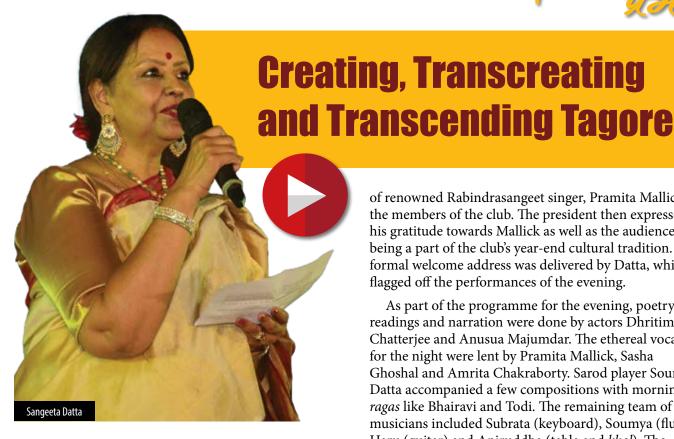












alcutta Club recently hosted its year-end cultural evening in association with Prabha Khaitan

Foundation. Curated by Sangeeta Datta, Ehsaas Woman of London, the programme, Yaad Rahoon (Remember Me), was presented by Baithak UK, an awardwinning, not-for-profit organisation celebrating and promoting Indian culture and talent in the United Kingdom. Datta, the director of Baithak UK, enlightened the audience about the etymology of the cultural programme by sharing an anecdote: legendary lyricist Javed Akhtar had translated a couple of Rabindranath Tagore's songs into Urdu, and the song, Tobu Mone Rekho, was transcreated as

Yaad Rahoon. The catalogue of songs that was curated

meticulously by Datta captured every mood of Tagore as a composer, spanning the entirety of his creative journey.

"Tagore lies in the depths of every Bengali's heart and soul, and so the Calcutta Club couldn't do anything that didn't include him," said Ramaditya Ray, cultural secretary of Calcutta Club. "Our president, Abhijit Ghosh, had said that if there was going to be a year-end cultural programme, it needed to be about Tagore's creations. This is a heritage that we simply cannot overlook." The programme began with the felicitation

of renowned Rabindrasangeet singer, Pramita Mallick, by the members of the club. The president then expressed his gratitude towards Mallick as well as the audience, for being a part of the club's year-end cultural tradition. The formal welcome address was delivered by Datta, which flagged off the performances of the evening.

As part of the programme for the evening, poetry readings and narration were done by actors Dhritiman Chatterjee and Anusua Majumdar. The ethereal vocals for the night were lent by Pramita Mallick, Sasha Ghoshal and Amrita Chakraborty. Sarod player Soumik Datta accompanied a few compositions with morning ragas like Bhairavi and Todi. The remaining team of musicians included Subrata (keyboard), Soumya (flute), Haru (guitar) and Aniruddha (tabla and khol). The dancing team included Aindrila Ghosh, Sejuti Das,

Pratima Chatterjee and Koyel Ghosh. The digital illustrations for every composition were done by Sudakshina Ghosh.

Anasua Mukherjee and Dhritiman Chatterjee began the evening by narrating Tagore's poem, Aji E Probhatey Robi'r Kor. From an enigmatic recitation, the dancing team took over and led the audience further into Tagore's world of love songs: love for nature, love for life, love for the physical and metaphysical, and everything

in between and beyond these limits. From his love songs, the performance moved towards his songs created from folk inspiration: the baul creations (Amar Praaner



Mansi Kamdar Shah











Manush Achhe Praane), which came with the idea of the Supreme Spirit in oneself; and the kirtan-inspired compositions (Majhe Majhe Tobo Dekha Pai). Folk gave way to songs of loss and grief (Shey Chole Gelo Bole Gelona), chiefly about the suicide of his beloved sister-in-law, Kadambari Devi, sung by Sasha Ghoshal.

The thread of performance shifted towards Tagore's inspiration from Argentina, to the writer Victoria Ocampo. Incidentally, Ocampo is the source of Tagore's *Purabi* poems, and is referred to as 'Bijaya' in the poems. For Tagore, Ocampo was the very incarnation of the Latin American spirit, whereas for Ocampo, Tagore encompassed all of India. This section ended with the everlasting melody of *Ogo Bideshini*. His idea of a metaphysical and idealistic love took centre stage again, with songs like *Ami Rupe Tomay Bholabo Naa*, *Jodi Taare Nai Chini* and *Tumi Robe Nirobe*. This was followed by Sangeeta Datta's Bangla-Urdu dual rendition of the titular *Tobu Mone Rekho/Yaad Rahoon*.

The evening encapsulated Tagore's multi-faceted celebration of life and love. Life, which connects man to Earth and the music of the Earth and the solar system; love, an ever-shifting prism of joy and separation; love, for the motherland and the imagination of nationhood. With this essence of joyousness and love for humanity, the evening was brought to a close with a song which renewed one's belief in life itself, reiterating music to be the most powerful thread that binds all: *Purano Shei Din'er Kotha*. The cultural secretary Ramaditya Ray wrapped up the event, by extending his gratitude to everyone present, the performers and the audience, whose intricate duet made the evening dazzle bright.

Yaad Rahoon was presented by Calcutta Club in association with Baithak UK









Project Kamakhya

I'm a writer and reader by heart, and I've been associated with **Prabha Khaitan Foundation** since the beginning of this year. It has given me the recognition and support to pursue my passion for reading and writing under their initiative, **Muskaan**. I've been privileged enough to be a part of the **Muskaan** community with other like-minded and talented youth.

Along with my writing, I'm the proud founder of Project Kamakhya. This is an initiative that I started last year with the aim of making a change in society by taking note of a certain issue and doing my bit to solve it. Project Kamakhya is geared towards advocating for and spreading awareness about menstrual hygiene and sustainable menstruation for underprivileged adolescent girls and women. I started this project under the 1M1B Future Leaders Program. My oratorial skills and determination helped me to be vocal about a topic that has been stigmatised since time immemorial.

Through my project, I've been able to create an impact on the lives of more than 1,000 girls and women solely from the underprivileged sections of society. I've conducted seven awareness sessions and sustainable pad distribution drives for my target audience in the remotest of villages of the Delhi NCR; these sessions have explained the key idea and importance of menstrual hygiene as a right to every girl. Not only have I done groundwork with my curated workshops, but I've also collaborated and carried out live webinars and streams. One of them was with Captain Shivani Kalra, a senior pilot with Air India who led Operation Ganga to rescue Indian students from the war zone in Ukraine. I've been able to eradicate innumerable period-related myths and taboos via my social media handle (@project kamakhya), with a side for sustainability- and awareness-related posts. Project Kamakhya has collaborated with recognised NGOs and foundations, including the CSR wing of Honda. Moreover, Project Kamakhya recently won the Global Sustainability Award for SDG 5 (Gender Equality) at the India International Centre, New Delhi, and was felicitated by Ashwini Kumar Choubey,



Minister of State for Consumer Affairs, Food and Public Distribution of India.

Project Kamakhya was selected to be presented at the United Nations Headquarters in New York City last November for the annual active summit. There, I pitched to grand global entrepreneurs and interacted with world leaders as a part of the Indian youth contingent.

I would like to extend my heartfelt gratitude to the Foundation, Sumitra Ray for always encouraging me, and Mansi Kamdar Shah for always engaging with us with a wide smile and a sense of joy.

Saina Sarin Class IX, Ridge Valley School, Gurgaon





About 40 million people across the globe are living with the human immunodeficiency virus, or HIV. About 1.5 million people have been newly infected with the virus in recent times. Six million people died from AIDS-related illnesses in the past 12 years. HIV/AIDS is a 'global epidemic'. It is the most death-dealing, ongoing public health issue worldwide.

HIV is not an easy virus to defeat. With no effective treatment on the horizon till date, prevention is the only viable option left to deal with it. It's bad enough that people are dying of AIDS, but no one should die of ignorance. Prevention is better than cure, especially when something has no cure. No one can lead our lives for us, so we are responsible for our own actions. People, especially the younger generation, need to be circumspect in their own approach. The new age concept of YOLO ('you only live once') has provided a route to the youth to roam all over the seemingly greener pastures, engaging in unsafe sexual activity, going Dutch over injectables or just being negligent of their comprehensive health safety. In the process, they are risking their precious lives to HIV. Here, awareness is a game changer.

Awareness about the disease, its spread, the precautions one can take, the testing, the treatment and, finally, knowledge about countering all the related stigmas should be enhanced. Stigma is a

barrier – it hurts and has botched up all holistic attempts to fight the tragedy, right from creating awareness to the inclusion of AIDS victims in mainstream society.

While I was working on a short film project by the National AIDS Control Organisation and the Indian Medical Association on AIDS awareness in 2008, I had a mind-altering experience of interacting with several people suffering from AIDS, and hearing about their daunting encounters in their day-to-day lives. They were all passive service beneficiaries, not empowered agents in our conventional community. From isolation and discrimination to being denied basic human rights, life for them was no less than a life sentence.

The only in-depth solution to this global struggle is a change in perception. Just like any other health issue, HIV/AIDS, too, can be talked about openly across all platforms, right from overcrowded public stages to comfortable dining tables. Educate your children, your staff, and your domestic helpers about this lethal but avoidable evil.

The fight against HIV/AIDS requires leadership participation from all corners of the community, urging everyone to get tested, informed and involved. This is a rallying cry to commit to working towards a day when HIV/AIDS is no longer a public health threat. Stand up and make a difference.



Together We

Thrive

ur hyper-hustling world hates to slow down. This mindset is a product of the highly competitive professional workplace which has expanded since globalisation. With a dogged focus on efficiency that allows no space for human error, employees often struggle to meet these idealistic demands. Unfortunately,

in this rat race, differently-abled individuals are left behind, and often, ignored. These individuals are often judged only on the basis of what they cannot do, as opposed to what they can.

Prabha Khaitan Foundation has, however, built an environment of inclusivity to change this mindset: in this organisation, differently-abled persons are acknowledged on what they can do differently! The Foundation places







importance on love, acceptance and inclusivity as the only viable way to coexist. It has embraced the inclusion of remarkable individuals with special needs, who are not only learning essential life skills on-site, but also extending their abilities to the hospitality sector at Taj Bengal, Kolkata, with the Foundation's whole-hearted support. Recently, the Foundation's Special Force took part in joyous Christmas celebrations at the Taj City Centre, Kolkata, complete with gifts, fun and a Christmas tree! Indranil Ray (Cluster General Manager — Operations, and General Manager, Taj City Centre) and his team made them feel very welcome. Being loved and accepted outside has helped these individuals love themselves, and grow. We hope they continue to thrive, through all seasons.







Kindness Brings Warmth to Even the Harshest Winter

Winters in many parts of India tend to be harsh. The flora and fauna that once flourished end up vanishing, and the sky turns grey. The cold nips at the skin, and each breath reminds us of how unforgiving the cold can be to those who have no way to stay warm. Barren, despondent — winter cannot get much worse for them.

That's why, during one such winter's day, **Prabha Khaitan Foundation** organised a blanket distribution drive at Rajkiya Balika Uchch Madhyamik Vidyalaya, New Hasanpura, Jaipur. The Foundation, through this event, aimed to bring warmth and comfort to the underprivileged resident children. In this cruel world, those children are all alone, and often have to fend for themselves in harsh conditions.

A little past noon, the proceedings began when Apra Kuchhal, the Foundation's Honorary Convenor

of Rajasthan and Central India Affairs, Vinod Pareek, the Principal, and other faculty members took things forward, accompanied by eager students. As the distribution went on, Kuchhal shared an inspiring message with the children, beseeching them to stay warm during the cruel winters. As the children received their gifts, their faces beamed with grateful smiles, signifying that true joy comes from the simplest acts of kindness.

This is proof that in a selfish world, altruistic actions like donating help strengthen bonds that transcend social divides. Each act of kindness is a rebellion on the face of poverty, and proof that there is humanity in our cruel world. Donation encourages empathy, and a collective consciousness that understands the shared goal of others' well-being. The Foundation aims to show that communities thrive when endeavours are selfless and the beauty of kindness can come forward.

Handscripted by Paresh Maity



OUR NEXT ISSU



Abhilasha Sethia



Abhirup Sarkar



Anshu Harsh



Divya Mathur



Divya Prakash Dubey



Geetanjali Shree



Ghanshyam Nath Kachhawa



Karen Anand



Namrata Jain



Nandini Das



Preeti Shenoy



Ramraksha Mishra Vimal



Ruchira Gupta



Shakeel Jamali



Shobha Tharoor Srinivasan



Vidhi Beri





Vipul Rikhi

The digital version of the newsletter is available at pkfoundation.org/chronicles



newsletter@pkfoundation.org





